अंक 8
अगस्त, वर्ष - 22

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पताः
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	4
संपादकीय	5
कार्यकारिणी बैठक	7
एक महत्वपूर्ण उद्देश्य	10
वन और जीवन	11
मीडिया रिपोर्टिंग और असर	13
आग्रह	13
भारतीय संस्कृति में कुम्भ की कालोत्तीर्ण महत्ता	14
इन्टरनेट और आज की दुनियां	15
कोफ्त	17
भारत के महान संत श्रृंखला-4 - श्री त्रेलंग स्वामी	18
खेल और व्यायाम	19
एक कर्त्तव्य -'अंतिम संस्कार '	21
वैकुंठ धाम की ओर...	25
हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे...	27
अंतिम विदाई	28
अंतिम संस्कार में ध्यान रखने वाली बातें	28
दान - ज़रूरत भी ज़रूरी भी	29
शाखा समाचार	32
समाज समाचार	33
शोक समाचार	34

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

बंधुवर पालागन,

विगत समय में कोरोनावायरस की विकरालता व भयावहता के मध्य आप सभी की जन भावनाओं को ध्यान में रखते हुए हमने महासभा की अन्नपूर्णा सहायता मैं वृद्धि कर 2000/- प्रति परिवार देने का निर्णय किया था। विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी इस मानवसेवा के कार्य में आप सभी से सहयोग अपेक्षित है। मैं आप सभी से अपील करता हूँ कि भगवान भोलेनाथ के प्रिय सावन माह के अवसर पर अपने जरूरतमंद व परिस्थितियों के सताए सामाजिक बंधुओं की जीवन यापन में यथासंभव सहयोग कर पुण्य लाभ अर्जित करें व सहयोग दे। दान पुण्य कभी व्यर्थ नहीं जाते।

18 जुलाई 2021को ऑनलाइन महासभा कार्यकारिणी की बैठक में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के कॉल सेंटर, महासभा सेवा केंद्र का शुभारंभ हुआ।

महासभा सेवा केंद्र का नंबर 0806-102- 0001 है।

इसमें आपको महासभा संबंधी सभी जानकारी उपलब्ध होंगी। आपकी महासभा संबंधी शिकायत व समस्याओं का निदान भी किया जाएगा। इस प्रयास की सफलता के लिए ज्ञानेंद्र जी व प्रसून जी को बहुत-बहुत बधाई। इसमें उपलब्ध जानकारी में आपके विवाह योग्य बच्चों की जानकारी, गुरुजी की उपलब्धता, बिजनेस नेटवर्क संबंधी जानकारी, पत्रिका व महासभा संबंधी जानकारी उपलब्ध होंगी।

महासभा के शताब्दी वर्ष के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भाई भरत जी (रिषड़ा) के संयोजन में किया जा रहा है। जिसमें आपसे महासभा के इतिहास संबंधी जानकारी, आलेख, फोटो उपलब्ध कराने की अपेक्षा रखते हैं।

आगामी सितंबर माह में पत्रिका का कविता विशेषांक का प्रकाशन किए जाने की तैयारियां चल रही है। संपादक शशांक जी के साथ भाई कुश जी व भाई भरत जी पूरे मनोयोग से सहयोग कर रहे हैं। आप सभी की शुभकामनाओं के अच्छे परिणाम होंगे। इस तरह का विशेषांक लगभग 50 वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था।आप सभी के सहयोग से यह अंक अविस्मरणीय होगा। इसमें हमारे समाज की बौद्धिक दक्षता परिलक्षित होगी।

महासभा का संस्था का रजिस्ट्रेशन का नवीनीकरण आगामी 5 वर्षों के लिए हो गया है। इसके लिए महेश जी कोषाध्यक्ष के प्रयासों को साधुवाद। कोरोना काल की विपरीत परिस्थितियों में अपने प्रयासों में सफल हो रहे हैं। इसके लिए मैं अपने साथियों, समस्त कार्यकारिणी व संपूर्ण समाज का आभारी हूँ। इस निरंतर सहयोग के लिए बहुत बहुत आभार। भगवान भोलेनाथ इस पावन माह में आप सभी पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें।

मंगलकामनाओं के साथ!!!

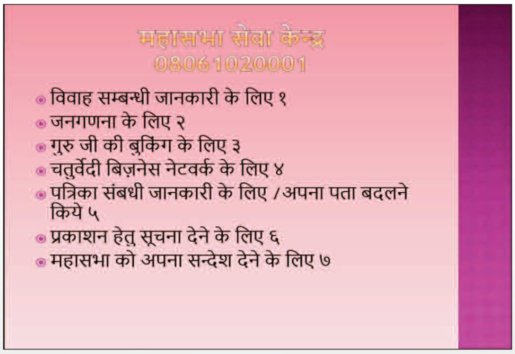

संपादकीय

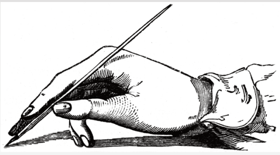

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम |
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात ||

हिंदू धर्म में इस वर्ष के पूर्वार्ध में विवाह आदि मांगलिक कार्यक्रमों का यह कालखंड समाप्त हो गया है। सावन माह के आरंभ के साथ पूजा-आराधना, तीज-त्यौहार, भक्ति-उपासना का कालखंड प्रारंभ हो चुका है। सावन मास भगवान भोले बाबा का प्रिय माह है। चंद्र प्रधान इस मास में शिवजी की पूजा अभिषेक को महत्वपूर्ण माना जाता है। जल तत्व प्रधान चंद्रमा वातावरण में नमी व शीतलता लेकर आता है। समुद्र मंथन के समय निकले विष का पान करने से भोले बाबा के शरीर के ताप में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। जिससे शीतलता के लिए उन्होंने चंद्रमा को धारण किया।शिव तो विषपायी है, मानव अमृत का प्यासा। भगवान आशुतोष की पूजा का इस माह में विशेष महत्व है।

आप सभी के सहयोग से हम आगामी अंक कविता विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने जा रहे हैं। आप सभी का इसमें अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ है। देश परदेश से कविता निरंतर आ रही हैं। बड़े, बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों सभी ने अभूतपूर्व उत्साह दिखाया है। इससे हमारा भी उत्साहवर्धन हुआ है। इस सहयोग से हम उत्साहित और रोमांचित हैं। कविता की संख्या से हम इसके स्वरूप की पुनर्रचना पर चिंतन कर रहे हैं। महिला, पुरुष, स्थापित, उदीयमान इस तरह के भेद बेईमानी होंगे। सभी को समान अवसर देने का हमारा प्रयास है। इस यज्ञ में आ. कुश जी (इटावा) व भाई भरत जी (रिसड़ा) दो पारंगत ऋषिपुत्र मुझे सहयोग दे रहे हैं। यह मेरा परम सौभाग्य है कि सभापति प्रदीप जी सतत व निरंतर मार्गदर्शन कर रहे हैं। पत्रिका का विगत अंक शोक समाचारों की अधिकता से भरा था। हमने बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि ले।, की तर्ज पर आगे बढ़ने का प्रयास किया। जीवन चलने का नाम है। जिसे सभी ने सराहा।

पत्रिका के इस अंक में महासभा की कार्यकारिणी की बैठक की कार्रवाई के साथ अनेक लेख दे रहे हैं, जो आपको पसंद आएंगे। कोरोना काल में अंतिम संस्कार को लेकर बाँधवों में जानकारी का अभाव देखने को मिला। जिस पर मेरे आग्रह पर श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), दिलीप जी (लखनऊ) व महासभा संरक्षक राजेंद्र नाथ जी (कोलकाता) ने शोध परक जानकारी हमें उपलब्ध कराई है। जिसे हम इस अंक में आपके समक्ष रख रहे हैं। चतुर्वेदी समाज के अनेक बांधव अंतिम संस्कार के समय निस्वार्थ भावना से समाज में सेवा दे रहे हैं। मेरी जानकारी के अनुसार नरेश जी (भोपाल), प्रभात जी (कानपुर), सुबोध जी (लखनऊ), दिलीप जी (लखनऊ), महेंद्र जी (इंदौर), रज्जन जी (कोलकाता) आदि की ये निस्वार्थ सेवाएं प्रशंसनीय व अनुकरणीय है। इस विषय पर अनेक किंतु परंतु होने के कारण लेखन संभवत कम हो पाया है। पर हमने एक धर्म संगत, नीति संगत जानकारी देने का प्रयास किया है। चित्रा जी (भोपाल) ने दान की महत्ता पर भी अपने विचार रखे हैं। इन शोध पूर्ण विषयों के लेखों के साथ संपूर्ण अंक पर आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर पालागन

- शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका – श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर – शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

कार्यकारिणी बैठक
18 जुलाई 2021, ऑनलाइन

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 18 जुलाई 20-21 को भगवान भोले शंकर के आशीर्वाद की छत्रछाया में व कोविड-19 के स्वास्थ्य रक्षार्थ प्रतिबंधों के मद्देनजर ऑनलाइन आयोजित की गई। बैठक के प्रारंभ में मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी ने ज्ञानेंद्र जी (गाजियाबाद) को मंगलाचरण हेतु आमंत्रित किया। तत्पश्चात ज्ञानेंद्र जी ने गणेश वंदना का सुर मधुर प्रस्तुति दी।

सभापति डॉ. प्रदीप जी की अनुमति से बैठक की कार्रवाई को प्रारंभ करते हुए मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी ने विगत बैठक की कार्यवाही की रिपोर्ट सदन के समक्ष प्रस्तुत की जिसका सदन ने सर्वसम्मति से पुष्टि कर पारित कर दिया।

सभापति प्रदीप जी ने गुल्लक योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कोरोना काल के कारण कमियों को सुधार कर इसे नए प्रारूप में सफल बनाने के लिए सभी से सहयोग की अपील की। अन्नपूर्णा सहायता योजना के अंतर्गत प्रति माह प्रति परिवार 2000/- रुपये दिया जा रहा है। अन्नपूर्णा योजना में समाज का भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है। सभी के सहयोग से पुनः निर्धारित राशि के साथ दो किस्त दी जा चुकी हैं। जनगणना का एक नवीन संक्षिप्त फॉर्म बनाया गया है। जिसका लिंक सभी सदस्यों व सभाओं को भेजा जा रहा है। जनगणना की आज की वर्तमान स्थिति के बारे में भी सभापति प्रदीप जी ने बताया। अन्य जानकारी में शहर का ब्यौरा स्त्री पुरुष संख्या, शिक्षा व अन्य विवरण विस्तार पूर्वक बताया गया है। जिसमें 3500 पुरुष व 3500 महिलाओं का ब्योरा आ चुका है। जिसमें शिवजी कोटा द्वारा शहरवार सूची प्रस्तुत की गई।

मंत्री मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी ने बताया कि अन्नपूर्णा सहायता के हितग्राहियों की संख्या वर्तमान में 26 से बढ़कर 37 हो गई है। यह सहायता त्रैमासिक स्तर पर जरूरतमंद बंधुओं को दी जा रही है। आपने इस वित्तीय वर्ष 2021- 22 वर्ष के अन्नपूर्णा दानदाताओं की सूची भी प्रस्तुत की।

मंत्री मुनींद्र जी ने कार्रवाई को आगे बढ़ाते हुए आगामी वर्ष के कैलेंडर के स्वरूप के बारे में सभी के विचार व सुझाव देने का आग्रह किया। जिसमें संजय जी (कानपुर) में समाज के मांगलिक अवसरों पर बनाए जाने वाले शुभ चिन्ह जैसे माय, छठी, स्वास्तिक, चौक आदि के उल्लेख का प्रस्ताव किया। बिपिन जी (गाजियाबाद) ने कैलेंडर का आकार बढ़ाने का प्रस्ताव रखा। उषा जी भोपाल ने ग्राम को केंद्रित कर कैलेंडर के प्रकाशन का सुझाव रखा। अखिलेश जी लखनऊ ने ग्रामों व हवेलियों के चित्र प्रकाशित करने का सुझाव दिया। चतुर्वेदी चंद्रिका के संपादक शशांक जी (भोपाल) में समाज के मंदिरों, धर्मशालाओं, स्कूलों के चित्र को केंद्रित कर प्रकाशन का सुझाव दिया। पंकज जी (मुंबई) ने इसे उचित समय पर प्रकाशित करने का सुझाव दिया। अभय राज जी (गुड़गांव) ने इसके वितरण हेतु एक शहर में एक व्यक्ति, एक स्थान सुनिश्चित करने का सुझाव दिया। अंबर जी (भोपाल) ने प्रतिभावान छात्रों के फोटो छापने का सुझाव दिया। ज्ञानेंद्र जी (नागपुर) ने कहा कि मंदिरों, बच्चों की फोटो, ग्रामों की हवेलियों की फोटो से अच्छा संदेश जाएगा। पुनीत जी (आगरा) में प्रतिवर्ष एक थीम आधारित कैलेंडर के प्रकाशन पर जोर दिया। मनीष जी (कोटा) ने वेदों व उनकी ऋचाओं पर आधारित कैलेंडर के प्रकाशन का सुझाव दिया। जिसका कैलाश जी (कासगंज) ने समर्थन किया। प्रसून जी (भुवनेश्वर) ने कहा कि ग्रामों पर आधारित फोटो को प्रकाशित किया जाना चाहिए। जिसके लिए फोटो प्रतियोगिता भी रखी जाए। ऋषभ जी (देहरादून) ने कहा कि फाइनल स्वरूप के बाद मांग के अनुसार संख्या निर्धारित कर कैलेंडरों का प्रकाशन कराया जाए। मधुकर पाठक (आगरा) व संजय मिश्रा (कानपुर) ने कहा की महासभा कार्य. का. सदस्यों व सभा के सदस्यों के सामंजस्य से कैलेंडर का वितरण किया जाए।

बिंदुवार चर्चा को आगे बढ़ाते हुए मंत्री मुनींद्र जी ने मनीष जी से युवा प्रकोष्ठ की गतिविधियों की जानकारी देने का आग्रह किया मनीष जी (कोटा) ने युवा प्रकोष्ठ के कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि युवा प्रकोष्ठ व आईटी प्रकोष्ठ मिलकर कार्य कर रहे हैं। विभिन्न शिक्षा संस्थानों में प्रवेश के लिए सहयोग करने का प्रयास है। इस पर सभापति प्रदीप जी ने युवा सम्मेलन के आयोजन की रूपरेखा तैयार कर प्रस्तुत करने को कहा। उषा चतुर्वेदी (भोपाल) ने महिला प्रकोष्ठ के कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए बताया कि 9 मई 20-21 को मातृ दिवस के अवसर पर भोपाल की महिलाओं द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें महामंत्री महासभा श्री मुनीन्द्र नाथ जी मुख्य अतिथि थे एवं संपादक शशांक जी

विशेष अतिथि थे। इस ऑनलाइन कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कविता विशेषांक में महिलाओं के लिए अलग विशेष अंक निकालने का प्रस्ताव किया।

आईटी प्रकोष्ठ के कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी श्री मुनीन्द्र नाथ जी द्वारा बताई गई जानकारी को आगे बढ़ाते हुए ज्ञानेंद्र जी (गाज़ियाबाद) ने एवम प्रसून जी (भुवनेश्वर) बताया कि विभिन्न क्षेत्रों के सफल सामाजिक व्यक्तियों के द्वारा अपने अनुभव साझा करने से समाज को प्रेरणा मिलती है। इसे ट्रस्ट टॉक कार्यक्रम के अंतर्गत प्रति शनिवार अतिथियों को आमंत्रित किया जाता है। इससे समाज को लाभ मिलेगा। समाज के बच्चों के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश मार्गदर्शन व स्टार्टअप में सहयोग भी किया जाएगा। गुरुजनों द्वारा नियमित व्याख्यान आयोजित होंगे। सभापति प्रदीप जी ने आईटी प्रकोष्ठ के कार्यक्रमों की सफलता पर बधाई दी।

मंत्री मुनींद्र जी ने शाखा सभाओं की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। जिसमें लखनऊ, कानपुर, दिल्ली, कोटा, आगरा, भोपाल, होलीपुरा आदि सभाओं के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी गई।

सभापति डॉ. प्रदीप जी ने महासभा सेवा केंद्र (आई.वी.आर.) का लोकार्पण करते हुए बताया कि यह एक ऐसा केंद्र बनाया गया है। जिस पर महासभा संबंधित सभी जानकारी एक जगह उपलब्ध होंगी। इसमें समाज के बांधव स्वयंसेवक (वालेंटियर्स) के रूप में काम कर रहे हैं।

सभापति प्रदीप जी ने आग्रह पर ज्ञानेंद्र जी ने महासभा सेवा केंद्र पर उपलब्ध सेवाओं के बारे में विस्तार से बताया कि इसमें विवाह संबंधी जानकारी, जनगणना, गुरुजनों से संपर्क व बुकिंग, समाज के सफल व्यवसाईयों से संपर्क, व्यवसायिक संपर्क व व्यवसायिक गतिविधियां, पत्रिका पता परिवर्तन व शिकायत, महासभा को सुझाव व शिकायत। इतनी सारी खूबियों से भरपूर उत्कृष्ट खूबियों वाले सेवा केंद्र के लोकार्पण पर सभी ने सभापति प्रदीप जी, ज्ञानेंद्र जी को करतल ध्वनि कर बधाई दी।

महासभा सेवा केंद्र
0806-102-0001

ज्ञानेंद्र जी (नागपुर) ने इसके परीक्षण हेतु फोन लगाकर जाँच की। इस पर प्रदीप जी,संजू (गाज़ियाबाद) ने चतुर्वेदी महासभा के सेवा केंद्र के स्वयंसेवकों द्वारा स्वागत पालागन शब्द द्वारा किये जाने का प्रस्ताव किया। क्योंकि यह समाज के बाँधवों के द्वारा, बाँधवों के लिए है। इस पर ललित जी (लखनऊ), प्रदीप जी,लालन (आगरा), उषा जी (भोपाल), आशीष जी (आगरा), विनीता जी (देहरादून) ने अपने विचार व्यक्त किये।ऋषभ जी देहरादून ने कहा कि उपलब्ध बायोडाटा के आधार पर रोजगार उपलब्ध कराने में भी सहयोग दिया जाए।

शशांक जी (भोपाल) ने कहा कि समाज के मंच पर समाज की वक्ताओं के आलेख वाले समाज के लिए ज्यादा लाभकारी होंगे। चतुर्वेदी चंद्रिका के माध्यम से प्रकाशित वक्ताओं के लेख समाज के बड़े वर्ग तक उनके विचारों को पहुंचा पाएंगे। इस प्रस्ताव की सभापति प्रदीप जी व मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी ने सराहना की। इसके लिए प्रयास किए जाने का सभापति प्रदीप जी ने आश्वासन दिया।

अभय राज जी (गुड़गांव) ने महासभा की वेबसाइट व ऐप पर वर्तमान जानकारी चाही गई। सभापति जी व ज्ञानेन्द्र जी ने

बताया कि पुरानी एप व वेबसाइट को उन्नयन व रूपांतरित कर दिया गया है। वे वर्तमान में कार्य कर रही है। हेमंत जी (नासिक) ने कहा कि प्रत्येक शहर के प्रतिनिधियों को इसमें जोड़ा जाए। जिससे आकस्मिक जरूरत के समय स्थानीय तौर पर मदद की जा सके। दिलीप जी (लखनऊ) ने कहा बांधव फोन करते समय समय का जरूर ख्याल रखें।

कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए भरत जी (रिषड़ा) ने महासभा के शताब्दी वर्ष विशेषांक के बारे में बताया जिसमें महासभा के संपूर्ण इतिहास को एकत्र करने का प्रयास किया जा रहा है। जिसमें अभी तक के अधिवेशन, सभापति, मंत्री आदि के बारे में संपूर्ण जानकारी होगी। सभापति प्रदीप जी ने समाज के बंधुओं से इतिहास संबंधी जानकारी फोटो व अन्य प्रकाशन सामग्री उपलब्ध कराने की अपील की। सभापति प्रदीप जी ने भी अपने अमूल्य व महत्वपूर्ण सुझाव दिए। शशांक जी, संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका ने कहा कि अधिवेशन व सभापतियों की सचित्र जानकारी दी जानी चाहिए। अधिवेशन संबंधी सकारात्मक गैर विवादित रोचक अनुभव भी समाहित किए जा सकते हैं।

रजिस्टार ऑफिस में महासभा के रजिस्ट्रेशन हेतु मुनीन्द्र जी ने महेश जी का आभार व्यक्त किया। आगामी 5 वर्षों के लिए महासभा के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रदत्त सर्टिफिकेट की कॉपी भी दिखाई गई। भरत जी (रिषड़ा) ने महासभा इतिहास स्मारिका हेतु सभी से विज्ञापन देने व दिलवाने का आग्रह किया। जिसकी दरों की सूची निम्नानुसार हैः

विज्ञापन दरें

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/
द्वितीय एवं तृतीय कवर	20000/
रंगीन फुल पृष्ठ	11000/
श्वेत श्याम फुल पेज	8000/
श्वेत श्याम हाफ पेज	5000/

श्वेत श्याम चौथाई पेज 3000/

शुभकामना संदेश चार लाइन 1100/

चेक व नगद सहयोग राशि "श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा" की सेंट्रल बैंक, आनंद विहार,दिल्ली के खाता संख्या 1006238340, के नाम पर देय होगी।

इस पर मंत्री मुनींद्र नाथ जी ने भरपूर विज्ञापन दिलवाने व पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

चर्चा की निरंतरता बनाते हुए सभापति प्रदीप जी ने बताया कि वृद्धाश्रम हेतु प्रयास किए जा रहे हैं। अभी इसमें सफलता नहीं मिल सकी है। मुंबई - अहमदाबाद हाईवे पर वापी (गुजरात) के पास आधार वृद्धाश्रम से चर्चा हुई है। जिसमें 3000/- रुपये प्रतिमाह के न्यूनतम शुल्क पर आवास व भोजन की संपूर्ण व्यवस्था है। इसमें अभी स्थान भी उपलब्ध हैं। जरूरत होने पर संपर्क किया जा सकता है। इसी प्रकार की चर्चा ऋषिकेश, बनारस व अयोध्या में भी चल रही है। मंत्री मुनींद्र जी ने बताया कि विगत 3 जुलाई को अन्नपूर्णा सहायता की किस्त 2,19,000/- रुपए की दी गई है। लेखेंद्रजी (लखनऊ) व विनय जी (अहमदाबाद) ने अथक प्रयासों से चतुर्वेदी चंद्रिका के सुंदर प्रकाशन हेतु संपादक शशांक जी को बधाई दी।

बैठक के अंतिम चरण में संरक्षक भरत जी (भोपाल) ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अखिल भारतीय स्तर पर आयोजन किया जाना चाहिए। ग्रामों के विकास व जुड़ाव पर जोर दिया जाना चाहिए। ग्रामों में निरंतर आयोजन होते रहने चाहिए। सभापति प्रदीप जी, मंत्री मुनींद्र जी, संपादक शशांक जी ने विपरीत परिस्थितियों में समाज को जोड़ने का जो कार्य किया है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। महेश जी, ज्ञानेंद्र जी को भी बधाई। भरत जी (रिषड़ा) को बड़ी जिम्मेदारी दी गई है। उनको मेरी शुभकामनाएं। ग्रामों में व ग्रामों के बारे में निरंतर जानकारी दी जानी चाहिए। बैठक के अंत में अपने अध्यक्षीय भाषण में सभापति डॉ. प्रदीप जी ने वर्तमान में चल रहे महासभा के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। जिसमें हर शनिवार शाम को आयोजित ट्रस्ट टॉक शो की सफलता पर सबको बधाई दी। जिसमें अब तक 12 वक्ता अपना वक्तव्य दे चुके है। आपने कहा कि युवा प्रकोष्ठ को शीघ्र ही एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करना चाहिए। महासभा सहायता केंद्र के शुभारंभ की आपने सभी को बधाई दी। वित्तीय लेनदेन हेतु गेटवे का उपयोग कम हो रहा है। अतः इसको निरंतर आगे बढ़ाने के लिए पुनर्विचार किया जाएगा। अगर यह सुविधा वर्तमान समय के परिपेक्ष में उपयोगी नहीं होती है, तो इसे समाप्त कर दिया जाएगा। जनगणना कार्य गूगल लिंक पर उपलब्ध है। अतः सभी से निवेदन है कि अपना व अपने रिश्तेदारों की जानकारी यथाशीघ्र भरवा दे। मेरी टीम का मुझे भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है। इसके लिए आप सभी का बहुत-बहुत आभार। धन्यवाद। तत्पश्चात मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी ने विगत समय में दिवंगत बांधवों को श्रद्धांजलि देने हेतु 2 मिनट का मौन रखने को कहा। तत्पश्चात सभी उपस्थित बान्धवों ने दिवंगत बंधुओं को 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी व सभा का विसर्जन हुआ।

विवरण प्रस्तुति ::

मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव

शशांक चतुर्वेदी, संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका

एक महत्वपूर्ण उद्देश्य

एक महत्वपूर्ण उद्देश्य समाज के सभी वर्ग के बांधवों को साथ साथ लाना की पूर्ति के लिए श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा ने प्रथम बार निर्मित आई.टी. प्रकोष्ठ के साथ मिल कर 8 मई 2021 से प्रत्येक शनिवार शाम 5 बजे समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों से उनके अनुभव से लाभान्वित होने के लिए, सामायिक तथा रुचिकर विषयों पर उन का उदबोधन तथा वार्ता प्रारम्भ की गयी है। इस श्रृंखला में अब तक निम्न प्रबुद्ध बाँधव पधारे है –

मई 7, मई – Lt Gen डाक्टर वेद चतुर्वेदी , गंगाराम अस्पताल दिल्ली
– corona how to treat yourself at home with family Doctor

मई ८, २०२१ – Lt Gen विष्णुकांत जी संरक्षक महासभा – your attitude can make us win war on corona

मई १५, २०२१ – आनंद चतुर्वेदी – corporate wizard – my corporate insight about people development

मई २२, २०२१ – Adv कुश चतुर्वेदी supreme court , Access justice during corona

मई २९,२०२१ – श्री संतोष चतुर्वेदी सेवा निवृत्त केंद्रीय सरकार – government rules on how to help devastated by covid १९.

जून ५, २०२१ – डॉक्टर अरविंद चतुर्वेदी IPS – cyber crimes & women safety

जून १२, २०२१ – प्रदीप चतुर्वेदी joint secretary राज्य सभा – वेदिक ज्योतिष – उत्तम जीवन जीने का मार्ग

जून १९, २०२१ – निशान्त चतुर्वेदी TV news editor – how to deal with fake news

जून २६, २०२१ – डाक्टर ज्ञान चतुर्वेदी हृदय रोग विशेषज्ञ – करोना कल तथा व्यंग लेखन

जुलाई ३. २०२१ – Maj Gen नीलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी – वसीयत क्यों और कैसे लिखे

जुलाई १०, २०२१ श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी – सांसद राज्य सभा – avenues for women in social services

जुलाई १७, २०२१ श्री ब्रिज किशोर चतुर्वेदी – चाय उद्योग विशेषज्ञ – success is my cup of tea .

सभी कार्यक्रम में समाज के बांधवों का उत्साह जनक भागीदारी रही।

– **मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी,** मंत्री, महासभा

संपादक के नाम पत्र

आज चतुर्वेदी चंद्रिका का जुलाई अंक मिला। पृष्ठ खोलते ही दिल कांप गया। शायद जो पत्रिका छाप रहे होगें उनके भी हाथ कांप गये होंगे। हमने अपने कितने अनगिनत बांधवों को इस महामारी में खो दिया। उनकी सूचना को एकत्र कर प्रकाशित करने का यथसम्भव प्रयास किया है। उन सभी को सादर नमन

–**पदमरेखा चतुर्वेदी,** भोपाल

–0–

चतुर्वेदी चंद्रिका का जुलाई अंक मिला। प्रथम पृष्ठ खोलते ही दिल बैठ गया। महामारी में कारण इतने बाँधवों के शोक समाचार देखकर आगे पढ़ने की हिम्मत ही नही जुटा पाई।

– **सुमति चतुर्वेदी,** भोपाल

वन और जीवन

- अनिरुद्ध कुमार चतुर्वेदी (गोपाल), लखनऊ

बहुत पहले की बात है। जब इस पृथ्वी पर जन जीवन बहुत ही कम था। पिछली कहानी में भगवान अकेले पड़ गये तो उन्होंने पृथ्वी जो पानी में डूबी हुई थी। उसे बाहर निकाल कर उस पर मनुष्यों,अनेक जीवों, वनस्पतियों (पेड़, पौधे, फूल पत्ते), सूरज, चन्द्रमा इत्यादि की रचना (बनाना) की। तुम तो जनते ही हो कि भगवान बहुत शक्तिशाली हैं, और उनकी ये शक्ति खर्च करने पर भी कभी कम नहीं होती। पर अकेले ही यह काम करते करते भगवान थक गए। उन्होंने जिन जिन को बनाया था। उन सब को स्वयं ही अपने लोगों को बनाने के लिये थोड़ी थोड़ी. अपनी शक्ति देकर आराम की सांस ली। लेकिन उनको ये शक्ति एसे ही नहीं मिल जाती थी। इसके लिए उन्हें भगवान की तपस्या करनी पड़ती थी। बहुत पहले जब मनुष्यों इत्यादि की संख्या बहुत कम थी तब एक राजा थे। उनका नाम था प्राचीनबर्हि। उनके दस पुत्र थे।

वे सब गुण और शक्ल सूरत में एक ही से थे। अतः राजा ने उन सब का नाम भी एक ही रख दिया “प्रचेता” और उनके दसों पुत्र प्रचेता कहलाये। उन दिनों चूंकि प्रजा बहुत कम होती थी, अतः हर पिता अपने पुत्रों को संतति रच कर अपने परिवार को बढ़ाने को ही कहता था। राजा प्राचीनबर्हि ने भी अपने पुत्रों को यही आज्ञा दी। पिता की आज्ञा मिलने पर प्रचेता तपस्या करने निकल पड़े। रास्ते में उनको शंकर जी मिले। वो उनसे बोले। देखो भाई, मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ,क्योंकि जो भगवान विष्णु की पूजा करता है, उसको मैं बहुत प्यार करता हूँ। उन्होंने प्रचेताओं को एक स्तुति (प्रार्थना) बताई और कहा कि तुम सब इस स्तुति से भगवान की आराधना, पूजा करना। तुम्हारा मनोरथ (इक्षा) जरूर पूरा होगा। ऐसा कह कर शंकर भगवान चले गये। तब सारे प्रचेता समुद्र के किनारे गये और पानी में खड़े होकर, बिना कुछ खाए पिये, भगवान की पूजा, शंकर जी की बताई प्रार्थना से, करने लगे। जब बहुत साल बीत गये तो भगवान प्रसन्न हो गये और प्रचेताओं को दर्शन दिया। उस समय जीवों की उम्र बहुत होती थी। भगवान तो सबके मन की बात जानते हैं। वो बोले कि हे प्रचेताओ मैं तुम्हारी पूजा से बहुत प्रसन्न हूँ। देखो काण्डव ऋषि की तपस्या को तोड़ने के लिए इन्द्र देवता ने अपनी एक अप्सरा प्रम्लोचा भेज थी। (जब कोई बहुत तपस्या करता तो इन्द्र को लगता कि ये कहीं मेरा इन्द्रासन, वरदान में मांग कर छीन न ले, तब वो इसी प्रकार का उपद्रव कर उनकी तपस्या में विघ्न डालने का प्रयास करते हैं)। ऋषि की तपस्या भंग हो गई। काण्डव ऋषि और प्रम्लोचा से एक लड़की मनीषा का जन्म हुआ। जन्म के बाद प्रम्लोचा उसे छोड़ कर वापस इन्द्र के पास चली गई। तब उस लड़की को वृक्षों (पेड़ों) ने पाला। तुम सब एक से हो अतः उससे विवाह करो। वो तुम सबके लिए अच्छी पत्नी होगी और सबको बराबर प्यार करेगी। कह कर भगवान अन्तरधान हो गये। भगवान से वरदान पाकर प्रचेता समुद्र से बाहर निकले तो क्या देखा कि सारी जमीन पर पेड़ ही पेड़ उगे हुऐ हैं। सारी जमीन इन्होंने घेर रक्खी है। उनने सोचा कि इसी तरह यदि ये बढ़ते रहे तो हमारी संतानें कहां रहेंगी ? उनको बड़ा गुस्सा आया। अच्छा तपस्या से उन सब में शक्ति बहुत आ गई थी। फिर भाई उन्होंने अपने मुंह से आग उगल कर पेडों को जलाना शुरू किया। अब तो पेड़ बहुत घबड़ा गये, और रोने लगे। चिल्ला चिल्ला के प्रार्थना करने लगे कि भाई आप हमको क्यों मार रहे हैं ? हम तो आपके जीवन के पालक हैं। 'पालक' सब्जी नहीं, पालने वाले को कहते हैं। उनके इस काम से ब्रम्हा जी को बहुत क्रोध आया। उन्होंने आकर उनको खूब डांट लगाई और पेड़ों को जलाने से रोक कर अपने घर चले गये। अब प्रचेताओं ने पेड़ों से पूछा कि तुम हमारा पालन कैसे करते हो ? पेड़ों ने कहा कि आप सबको भोजन के लिए हम फल देते हैं, चिकित्सा के लिए औषधियां भी हमसे ही बनती है। धूप में छाया देते हैं। जहाँ हमारा जंगल नहीं होता वहां पानी नहीं बरसता और सबसे बड़ी बात है कि हम आपको ऑक्सीजन बना कर देते हैं जिसके बिना कोई जीव जिंदा नहीं रह सकता। आपकी सांस से हमें भी! भोजन मिलता है।

तब प्रचेताऔं ने पूछा कि तुम ऑक्सीजन कैसे बनाते हो ? तुमको हमारी गंदी छोड़ी सांस से भोजन कैसे मिलता है?

पेड़ बोले देखिये आप जब सांस लेते हैं तो जो हवा अन्दर फेफड़ों जाती है। उसमें ऑक्सीजन होती है। वो आपके फेफड़ों में जाती है। फेफडों में सारे शरीर की गन्दगी इकट्ठा होती है। इस गन्दगी को कार्बन यानी कोयला कहते हैं। हवा की ऑक्सीजन फेफडों में पहुँच कर पौंछा लगाती है। जितनी देर में आप सांस छोड़ते है, ये सारा कोयला पौंछ कर बाहर निकल जाती है, और आपके फेफड़ों को साफ कर देती है। यदि कार्बन साफ न हो तो इकट्ठा हो कर जीव को मार डालता है। क्योंकि गंदे फेफड़ों को श्वास लेने में बहुत कष्ट होता है। अब कार्बन ऑक्सीजन के साथ मिल कर कार्बन डाई ऑक्साइड गैस बनाता हैं। यह गैस जहरीली होती है। हम इस कार्बन डाइ ऑक्साइड से कार्बन निकाल कर ऑक्सीजन को फिर हवा में आप लोगों के लिए छोड़ देते हैं। और कार्बन चूस लेते हैं।

प्रचेताओं ने पूछा कि अरे भाई ये सब तुम लोग कैसे करते हो? अब जो पेड़ों ने कहा वो मैं तुम्हें बताता हूँ।

हमारा और पौधों की पत्तियों का रंग हरा होता है? हमारी पत्तियों में एक पदार्थ होता है, क्लोरोफिल जो हमें हरा रंग देता। हमारी पत्तियों के पीछे (पीठ पर) हजारों रन्ध्र (मुँह – स्टोमेटा) होते हैं ,जो वाल्व की तरह खुल और मुंद कर वायुमंडल में आई कार्बन डाइ ऑक्साइड को चूस लेते हैं। फिर क्लोरोफिल कार्बन निकाल कर ऑक्सीजन बाकी जीवों के लिए छोड़ देता है और कार्बन हमारे लिये। यही कार्बन हम पेड़–पौधों का भोजन है। लेकिन ये कार्य होता केवल सूर्य के प्रकाश में ही है। इस व्यवस्था को फोटो सिन्थेसिस कहते हैं। ये कार्बन हम अपनी जड़ों में पहुँचाते हैं।

प्रचेताओं ने पूछा, कि भाई तुम तो चलते फिरते नहीं हो फिर जड़ों तक कार्बन , कौन ले जाता है ?

पेड़ों ने कहा। हम जंगली वृक्षों ने आपस में सम्बन्ध बनाये रखने और अपने भोजन को डालियों तथा पत्तों तक पंहुँचाने के लिये पृथ्वी के नीचे सहकारिक संचार का जाल बना रक्खा है (इंटरनेट)। हमारी गहरी जड़ो में मैकररहिज़ल का जाल बिछा हैं। मइकोरीहिज़ा पेड़ की जड़ों और फफूंदी के बीच जैविक संबन्ध को कहते हैं। जैविक माने जीवन से सम्बद्ध या जुड़ा।

हममें से बड़े पेड़ों की गहरी जड़ों में दर्जनों जाति की फफूंदियां होतीं हैं। ये आपस में दूसरे पेड़–पौधों की फफूंदी से, हमेशा संपर्क में रहती हैं और हम लोगों को हर प्रकार की सूचना देती रहती हैं। पौधा (प्लान्ट) फोटो सिन्थेसिस के द्वारा जैविक (ऑर्गेनिक) परमाणु बनाता है, जैसे शक्कर के चौकोर दाने (क्रिस्टल)और फफूंदी को दे देता है।और फफूंदी संपूर्ण पौधे को मिट्टी से पानी और पौष्टिक भोजन पहुँचाती है। एक बात और कि हम मिट्टी में रहने वाले हजारों छोटे छोटे जीवों (जो केवल माइक्रोस्कोप से ही देखे जा सकते हैं) की संगत में रहते हैं। जड़ें मिट्टी के भीतर होती हैं न? वातावरण से जुटाई कुछ कार्बन मिट्टी में भी प्रवेश कर इन जीवों का पोषण करती है। ये ही सूक्ष्म जीव तरह तरह के पौधों को उत्पन्न करते हैं और मिट्टी को उपजाऊ भी बनाते हैं।

हमारी फफूदियां दूसरे पेड़ों की फफूंदीयों से आपसी संचार बनाये रखती हैं। इस तरह करीब करीब 90% पौधे आपस में ऐसी फफूँदीयो से जुड़ी रहते हैं। गहरी जड़ों वाले पेड़ अपनी इसी संचार व्यवस्था से छोटे बच्चे पौधों का भी पोषण करते हैं। जब वो संकट में होते हैं तब हम उनको पौषटिक पदार्थों की अधिक मात्रा दे कर उनकी रक्षा करते हैं। ये सूचना भी हमें हमारी इन्हीं फफूदियां से ही मिलती है। सूखे एवं कीणों के आक्रमण की सूचना भी फफूदियां आपस में साझा कर हम तक पहुंचाती हैं। ऐसे संकट काल में वो ही एनज़ाइम का उत्पादन बढ़ा देतीं हैं। एनज़ाइम हमारे शरीर में होने वाली रासायनिक प्रक्रियाओं को बढ़ावा देता है। ये उत्प्रेरक (कैटेलिस्ट) का कार्य करता है। उत्प्रेरक ,किसी भी क्रिया की गति को, स्वयं नष्ट हुए बिना, बढ़ा या उत्तेजित करता है। इस तरह हममें और दूसरे जीवों में इन विपदाओं से लड़ने की शक्ति आती है। एनज़ाइम्स प्रोटीन से बनते हैं और शरीर में होने वाली रासायनिक प्रक्रियाओं को बढ़ावा देते हैं।

अब आप देखिये कि हम आपके जीवन के लिये कितना काम करते हैं।

1– हममें से प्रत्येक वृक्ष, एक वर्ष में 250 पाउन्ड आक्सीजन पैदा करता है।

2– हम 2 से 8 डिग्री तक वायु मंडल का तापमान कम करते हैं।

3– एक वृक्ष साल भर में 800 पाउंड तक कार्बन डाई ऑक्साइड कब्जा कर अपने भंडार में आपत्ति काल के लिये रखता है।

4– हम मिट्टी, धुयें और हानिकारक गैसों के लिये छलनी का काम करते हैं। सलफर, नाइट्रोजन आक्साइड जैसी हानि कारक गैसों को सोख लेते हैं।

5– वाष्प उत्सर्जन (भाप बनकर वातावरण में पानी की मात्रा बढ़ाना) के द्वारा वातावरण को ठंडा रखते हैं। एक पेड़ एक साल में 40,000 गैलन तक पानी को भाप बनाकर वायु मंडल को देता है।

6– हम अपने क्षेत्र की विविधता, तरह तरह के पक्षियों, जानवरों के संरक्षण से और विभिन्न प्रकार के पौधे उत्पन्न कर बनाये रखते हैं।

7– हमको खेतों में लगाने से हम अच्छी

फसल पैदा करने में सहायक होते हैं। (पेड़ों को फसलों के साथ लगाने को कृषि वानकी एग्रो फॉरेस्ट्री कहते हैं।)

इसलिए हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमको मत जलाइये, और ये कन्या जिसे हम लोगों ने बड़े यत्न से पाल पोस कर बड़ा किया। इससे विवाह कीजिए। प्रचेताओं को ध्यान आया कि भगवान ने भी तो इसी कन्या से विवाह करने को कहा था। तब प्रचेताओं ने पेड़ों को जलाना छोड़ उनसे माफी मांगी। अब दसों ने मनीषा से विवाह किया और अपने पिता जी के पास अपने राज्य चले गये। राजा प्राचिनबर्हि बेटों के साथ बहू को देख कर बहुत प्रसन्न हुए और खूब धूम धाम से उसका स्वागत किया। इतनी कहानी बोदा रानी, बोध बुदक्कड़, चूल्हे ऊपर चक्की, और सुनने वालों की सास की "सुन्दर नाक"।

शिक्षा : अब समझ में आया कि पेड़ और जंगल हमारे जीवन के लिये कितने महत्वपूर्ण जीव है। उनको न काट कर ज्यादा से ज्यादा लगाने का प्रयास करना चाहिए।

मीडिया रिपोर्टिंग और असर

- **निशीथ चतुर्वेदी**, डबरा

नेगेटिव रिपोर्टिंग की खूबी यह है कि उसे पढ़ा बहुत जाता है, लेकिन उसके नुकसान ज्यादा हैं। हम बताते हैं कि अस्पतालों में क्या क्या कमी है। कभी कभी न्यूज को मसालेदार बनाने के लिए उसे बहुत बढ़ा चढ़ा कर लिखते हैं एक लडका बीमार को लेकर अस्पताल पहुंचा स्ट्रैचर अन्दर रखा था। जल्दी पहुंचाने के लिए घरवाले उसे उठाकर अस्पताल में ले गये, जो हमेशा होता है। लेकिन फोटो के साथ न्यूज़ आती है।

अस्पताल में स्ट्रेचर तक नहीं कोई यह भी तो देखे कि अस्पताल में 4 स्ट्रेचर उपलब्ध हैं जो अन्य मरीजों के काम आ रहे हैं या अस्पताल में एक खाली रखा था लेकिन घरवालों ने अन्दर जाकर उसे लाने की जगह जल्दबाजी में मरीज को स्वयं उठाकर ले जाने का फैसला लिया। ऐसी अधूरी खबरें मरीजों का मनोबल तोडती हैं और हम कोरोना के सहायक बन जाते हैं। इसके स्थान पर यदि हम यह बताना शुरु करें कि वर्तमान में क्या क्या सुविधायें हैं और बस इनकी कमी है जिसकी पूर्ति की जरूरत है। साथ ही हम समाज सेवी संस्थाओं और समृद्ध व्यक्तियों से आव्हान करें कि वे आगे आकर कमियों की पूर्ति कर कोविड से लड़ाई में अपनी अहम भूमिका का निर्वहन करें। साथ ही हमारी न्यूज़ में मुख्य रुप से दो आंकड़े होते हैं कि आज इतनी मौतें हुई और इतने नये संक्रमित मिले। यदि इसके साथ एक आंकडा और प्रमुखता से बताया जाए कि आज ठीक होकर घर जाने वाले मरीजों का संख्या कितनी है तो यह पाजिटिव न्यूज़ बन जाए और मरीजों का मनोबल न तोड़े। आप सब जानते हैं कोरोना के मरीज को आत्मबल की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। कहीं हम अनजाने, अनचाहे कोरोना की मदद तो नहीं कर रहे। मरीजों का मनोबल तोड़कर आत्मावलोकन की जरूरत है। हम सब यह जानते हैं दुनिया कठिन परिस्थितियों से गुजर रही है। इसमें मिलकर काम करने की जरूरत है और मरीजों को संबल प्रदान करने की जो उनकी इम्युनिटी बढाये। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कोरोना में मृत्यु दर 1 से 2 प्रतिशत है जबकि सही होने वाले 98 से 99 प्रतिशत है। बस जरूरत है, आवश्यक सावधानियां बरतने और आवश्यक चिकित्सा कराने की। इसमें लापरवाही या देरी नुक्सानदेह साबित हो सकती है। शंका होते या लक्षणों के दिखते ही जांच करायें और चिकित्सकों द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन करें !

दो गज दूरी और मास्क है जरुरी!

आग्रह

महोदय,

हर्ष का विषय है कि चतुर्वेदी महासभा ने अपनी यात्रा के सौ वर्ष पूर्ण कर लिए है।इस वर्ष महासभा अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रही है।कोरोना महामारी के कारण सभा वृहद समारोह तो आयोजित नही कर सकी है,लेकिन अपने शताब्दी वर्ष मे महासभा द्वारा वर्चुअली नियमित कार्यक्रम किये जा रहे है।इसी सन्दर्भ मे कार्यसमिति ने शताब्दी वर्ष को अक्षुण बनाने हेतु एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है।स्मारिका मे सभा की स्थापना से लेकर अबतक की यात्रा का पूरे लेखाजोखा के साथ ऐतिहासिक एवं कीर्ति परख आलेख भी समाहित किए जायेगे।

अतःआपसे निवेदन है कि स्मारिका मे निम्न दर पर ₹श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा ₹के नाम चैक द्वारा भुगतान कर अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देने की कृपा करे। खाता विवरण

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा बचत खाता न.1006238340 आई एफ एस कोड- CBIN0283533 सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ब्रांच- आनंद विहार,दिल्ली

विज्ञापन दरें

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-
द्वितीय एवं तृतीय कवर	20000/-
रंगीन फुल पृष्ठ	11000/-
श्वेत श्याम फुल पेज	8000/-
श्वेत श्याम हाफ पेज	5000/-
श्वेत श्याम चौथाई पेज	3000/-
शुभकामना चार लाइन	1100/-

: संपर्क :

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी(सभापति) - भरत चतुर्वेदी (संयोजक)
09873395001 - 07059086775
मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी(मंत्री) - शशांक चतुर्वेदी (संपादक)
09871170559 - 09826086879

भारतीय संस्कृति में कुम्भ की कालोत्तीर्ण महत्ता

- **कैलाश चतुर्वेदी**, कासगंज

'' अहिस्तं वै पश्यामो बहुधानु संतः।
स इमा विष्वाभुवनानि कालं तमाहु परमे व्योमन।।''
–अथर्ववेद

हमारा भारतवर्ष धार्मिक एवं कृषि प्रधान देश है। भारत शब्द का अर्थ है भा–धर्मेरताः प्रजा यस्य तद् भारतम। जहॉ की प्रजा धर्म कर्म में तत्पर रहे वही भारत है। भारत की प्रतिष्ठा, संस्कार और संस्कृति से है इसी कारण यहॉ नदियों को बड़ा महत्व दिया जाता है। यहॉ गंगाजल ही औषधी और विष्णु भगवान का स्मरण करना ही वैद्य है– '' औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यौ नारायणो हरिः।'' कुम्भ पर्व आर्य जाति का अति प्राचीन, परम पवित्र तथा नितान्त नैष्टिक पर्व है। परंम्परा और शास्त्रीय अभिमत की दृष्टि से कुम्भ पर्व उस समय को कहते हैं जब आकाष मण्डल में विशिष्ट ग्रह राशि आदि का योग सम्पन्न होता है। ग्रह राशि की खगौलीय घटनाऐं और कुम्भ पर्व के विशेष ग्रह योगों का प्रभाव हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक के क्षेत्र विशेष में ही होता है। कुम्भ हमारी संस्कृति में कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। पूर्णता प्राप्त करना हमारा लक्ष्य है, पूर्णता का अर्थ है समग्र जीवन के साथ एकात्मता और इसी पूर्णता की अभिव्यक्ति है पूर्ण कुम्भ। कुम्भ शब्द का एक अर्थ है रोकना, प्राणों के नियमन को कुम्भक कहते हैं। प्रणायाम के तीनों हिस्से– पूरक– सांस भरना, कुम्भक– सांस रोकना, रेचक – सांस छोड़ना महाकुम्भ का ही एक रूप है। कुम्भ पर्व सांसों का त्यौहार है।

''कुम्भी वैद्यां मा व्यथिष्ठा यज्ञायु घैराज्ये नातिषिक्ता।''

वेदों की कई ऋचाओं में कुम्भ का उल्लेख अनुस्यूत है। ऋगवेद की यह ऋचा कहती है कि कुम्भ पर्व में तीर्थ करनें वाला मनुष्य स्वयं अपने फल रूप से प्राप्त होने वाले सत्कर्मो से अपने पापों का विनाश करता है। शुल्क यजुर्वेद की भी एक ऋचा में कुम्भ की महिमा यों वर्णित है–

'' कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभि यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भोऽअन्तः।
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृम्यः।।''

अर्थात कुम्भ पर्व मनुष्य को इस लोक में शारीरिक सुखों को प्रदान करनें वाला व दूसरे लोकों में पितरों को उत्तमोत्तम सुखों को देने वाला है। कुम्भ पर्व का आधार बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा का योग है। हरिद्वार में कुम्भ के लिए जहॉ बृहस्पति का कुम्भस्थ होना जरूरी है वहीं प्रयाग कुम्भ के लिए उसे मेषस्थ या वृषस्थ होना चाहिये। किन्तु नासिक और उज्जैन कुम्भों में यह सिंहस्थ होता है। इसलिये इन स्थानों पर आयोजित कुम्भ पर्वो को सिंहस्थ संज्ञा भी दी गई है। मेष राशि में सूर्य व कुम्भ राशि में गुरू के आने के संयोग से हरिद्वार में कुम्भ का दिव्य और भव्य आयोजन चार षाही स्नानों के साथ हो रहा है।

'' कलशस्य मुखे विष्णुःकण्ठे रूद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।''

इस श्रद्वा संवलित महान पर्व का नामकरण ही कुम्भ शब्द पर आधृत है। कुम्भ का पर्यायवाची

शब्द है कलश। प्रतीक शास्त्र के अनुसार कलश वरूण, वायु और सूर्य का प्रतीक है, संसार के सभी वैभव, देवी–देवता, वेद पुराण आदि सभी इसमें निहित है। कलश के पूजन से सभी स्वमेव पूजित हो जाते हैं। कुम्भ व कलश की महिमा तो वर्णनातीत है। दरसल कुम्भ स्नान की बहुमुखी धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व के अतिरिक्त सर्वोपरि तथ्य यह है कि मनुष्य इस अवसर पर उन पांचो तत्वों के साथ एकमेव हो उठता है जिनसे उसकी काया निर्मित हुई है। विभिन्न नगपुत्री के पावन तट पर नानाविध साधना– उपासना और अर्चना के क्रम में ''छिति जल पावक गगन समीरा'' की लोकोत्तर पूजा अवश्य भाव से हो जाती है तथा मन– प्राण उर्ध्वगामी हो उठते हैं। अनादिकाल से आदरास्पद एवं समादृत कुम्भ पर्व– स्नान एक ऐसा अवसर है जब पंथ, जाति,वर्ण, लिंग आदि की संकीर्ण भावनाऐं नदियों के पावन जल में समाहित हो जाती है। श्रद्वालु नर–नारी एक स्वर से उदात्त मानववाद की रागिनी छेड़ते हैं। अपरिचय में परिचय का व अनात्मीयता में आत्मीयता का दर्शन होता है और बहुवचन भारत एक वचन हो जाता है।

।। हर हर महादेव।।

इन्टरनेट और आज की दुनियां

- डा॰ ऋषभ चतुर्वेदी, कमतरी/ देहरादून

यद्यपि आज का विषय वर्तमान और भविष्य दौनो से सम्बन्ध रखता है परन्तु मैं इसकी रूपरेखा अपने बचपन की स्मृतियों से स्थापित करने का प्रयास करूँगा। मेरा बचपन- अर्थात आज से लगभग 55- 60 वर्ष पीछे। कमतरी हमारा गांव है। मेरे पिता डा॰ कैलाष चन्द्र जी आगरा कालेज आगरा में इतिहास विषय के प्रवक्ता/ विभागाध्यक्ष थे और हम लोग आगरा में हण्टले हाउस में रहते थे। गर्मियों में सभी परिवार के सदस्यगण पहले आगरा में एकत्रित होते थे फिर कमतरी के लिये प्रस्थान होता था। सभी सदस्यगण मतलब लगभग 25 से 30 सदस्य। चचेरे सगे का कोई महत्व नहीं था। हण्टले हाउस के हमारे प्रांगण में बाहर 8 से 10 चारपाईयां बिछती थी पुरूषों के लिये, और बच्चे, महिलायें अन्दर घर में।

एक बात कह दूँ कि संख्याओं में कोई अतिश्योक्ति नहीं है। खाना कोयले की अंगीठी पर बनता था। न तो गैस जैसी सुविधा तो होती थी, न ही प्रेषर कुकर जैसी कोई सुविधा। सकरा निखरा भी चलन में था। ब्यारू खतम होते हाते शाम की रसोई की तैयारी शुरू हो जाती थी। लगभग एक सप्ताह आगरा रूकने के उपरान्त कमतरी के लिये प्रस्थान होता था जहां लगभग एक माह का प्रवास हुआ करता था। आपस में कितनी पारिवारिक चर्चायें होती रहती थीं कितना आनन्द आता था, समय तो वास्तव में जैसे पंख लगा कर उड़ जाता था। महिना डेढ़ महिना कब कट जाता था पता ही नहीं चलता था।

कमतरी मे हम ''मुखिया परिवार'' के पास एक बड़ा ट्रान्जिस्टर हुआ करता था। जिसके माध्यम से शाम 8 बजे आकाशवणी के माध्यम से देश दुनियाँ के समाचार मिलते थे। लगभग पूरा गाँव इकटठा हो कर कार्यक्रमों का आनन्द लेता था और विभिन्न विषयों पर लम्बी चर्चायें होती थीं।

इस तरह परिवारों की एकता और संबन्ध चला करते थे। अन्यथा पत्राचार ही एक सम्पर्क का साधन रहता था। इतनी सी होती थी दुनियाँ। न फोन थे, न मोबाइल थे, न इन्टरनेट! क्या आज की पीढ़ी इस तरह के परिवेश की कल्पना कर सकती है? आज के परिदृष्य में इतने बड़े परिवार होना, उनका हर साल एक साथ एकत्र होना, सामूहिक रूप से समय व्यतीत करना। केवल परिकल्पना ही लगेगा। रिश्ते भी आज की तरह औपचारिक नहीं हुआ करते थे। आत्मीय प्रेम ही रिश्तों का आधार हुआ करता था। एक दूसरे के दुख सुख आपस में बंटे हुये हुआ करते थे। निजिता की बात कम ही होती थी।

उपरोक्त भूमिका के बाद अब मैं अपने आज के विषय पर आता हूं।

दुनियाँ ने आज बहुत तरक्की कर ली है। परिवार समय की मांग के अनुरूप छोटे तो हो गये हैं और आपस की दूरियाँ दीमक की तरह सम्बन्धों को नष्ट करती जा रहीं है। अपनी जिन्दगी को सुखमय बनाने के लिये इन्सान नये आविष्कार करता ही रहता है पर शायद ये एक अन्तहीन प्रक्रिया है। कुछ पता नहीं उसकी मंजिल है कहाँ ?

समय के साथ चलना तो अति आवश्यक है, नये आविष्कारों का आत्मसात करना तर्क संगत है। पर अच्छे बुरे की परख और चयन जीवन का अति आवश्यक अवयव है। इन्टरनेट के आविष्कार के बाद जितनी सुविधा परख जिन्दगी हुई है उतना ही भ्रम और जोखिम भी इसने उत्पन्न कर दिया है जो परोक्ष रूप से तो अदृश्य है पर कब आपके लिये असमान्य स्थिति उत्पन्न कर दे, आप संकट में घिर सकते हैं।

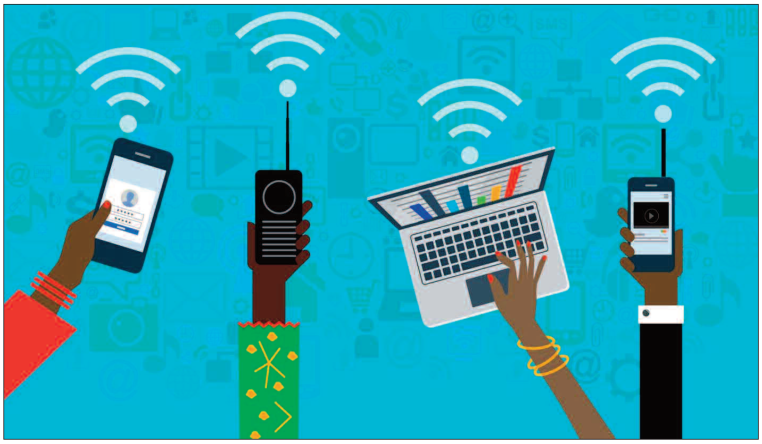

कम्प्यूटर के उपयोग तक तो फिर भी जोखिम सीमित ही था पर स्मार्ट फोन ने तो जिंदगी ही बदल के रख दी है। जिंदगी की हर जरूरत का एक ही समाधन है स्मार्टफोन और इन्टरनेट। जब तक इसकी सेवायें मूल्य आधारित थीं, फिर भी गनीमत थी। जब से कम से कम कीमत पर इस सुविधा को उपलब्ध कराने की होड़ लगी है, हम जाने अनजाने मे इसकी गुलामी की जंजीरों से बंध गये हैं। हमारा समय हमारा अपना नहीं रहा। विड़म्बना ऐसी हो गयी है कि साथ साथ रहते हुये भी हम साथ नही रह पा रहे।

इस अवस्था के भी दो पहलू हैं। एक तो आज की परिस्थितियों में जीवन यापन / व्यवसाय इसके बिना सम्भव नही रह गया। साथ ही हम को जरूरत की हर सुविधा घर बैठे उपलब्ध है और त्वरित गति से उपलब्ध है। आपको शरीर को कष्ट देने की आवश्यकता नहीं है। आप आलस की चादर ओढ़ कर अपने स्वास्थ्य से समझौता भी कर सकते हैं। बच्चे और बड़ों के लिये खेल तथा मनोरंजन के तमाम साधन भी इन पर उपलब्ध हैं। बाहर जाने और हाथ पैर चलाने की कोई आवष्यकता ही नहीं रह गई।

अब आता हूँ दूसरे पहलू पर। मुफ्त में उपलब्ध कुछ एप, जैसे गूगल, व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्वीटर, यू ट्यूब, जी मेल आदि। कोई हमारे लिये ये सुविधायें मुफ्त में आाखिर क्यों उपलब्ध करा रहा है? इन एप का संचालन जो भी संस्था करती है उनके संचालन पर कितना खर्च आता है कभी कल्पना कर के देखिये। कितने विशाल और सुविधा सम्पन्न इनके कार्यालय हैं, ये कार्यालय दिन रात 24 घंटे कार्यरत रहते हैं। कितने आकर्षक वेतन पर इनके कर्मचारी कार्य करते हैं, इनके सर्वर की कीमत का अन्दाज लगा पाना आम आदमी के लिये असम्भव ही है। फिर भी ये हमको बिना किसी मूल्य के उपलब्ध हैं। क्या इस बात पर हमने विचार किया है?

जैसे समाचार पत्र और टेलीवीजन का कारोबार विज्ञापनों से होने वाली आमदनी से चलता है, संचार की इस दुनियाँ का सारा अर्थशास्त्र हमारी व्यक्तिगत जानकारी के मूल्य पर टिका है। हमारी व्यक्तिगत जानकारी का वे मूल्य लगाते हैं। वे हमारी सारी गतिविधियों पर नजर रखते हैं। हमारी बैंकिंग सूचनाओं तक मे सेंध मारी कर लेते हैं।

हम लोग पूरा पूरा दिन इनके उपयोग में निकाल देते हैं बिना समझे कि हम इसका क्या मूल्य चुका रहे हैं। और हमें मिलता क्या है एक भ्रमित अनुभूति कि हम कितनों के सम्पर्क में हैं, हमारा सम्बन्धों का दायरा कितना विषाल है। हमारे मित्र तो हजारों में हैं, और आप स्वयं को कितना लोकप्रिय महसूस करने लगते हैं। पर आप यह भी जानते तो हैं कि इस आभासी दुनियाँ और वास्तविक दुनियाँ में बहुत फर्क होता है। वर्चुअल और एक्चुअल में कोई मेल नहीं है। आपके जरूरत के समय एक्चुअल ही साथ निभायेगा जिसको वर्चुअल के चक्कर में हम नज़र अन्दाज कर देते हैं। कितना समय हम इन आभासी रिश्तों को गुड़ मोर्निंग आदि के चित्र भेज कर खुश होते हैं। क्योंकि ये सब सुविधायें हम फ्री में समझते हैं।

अक्सर खबर पढ़ने को मिलती है कि इस माध्यम के द्वारा लोगों से ठगी कर ली गई। बैंक अकाउन्ट से पैसे गायब हो गये। फेसबुक पर अपनी फोटो, अपनी व्यक्तिगत सूचनायें ठनक में पोस्ट करते रहने से कई अन्य तरह की परेशानियों में फँस जाते हैं। इस लेख को लिखने यह आशय कदापि नहीं है कि हम को इस माध्यम से दूरी बना के रखनी चाहिये पर हाँ अपने समय का मूल्य पहचानना चाहिये, घर के जरूरी कार्यों और बच्चों की परवरिश पर आवश्यक ध्यान देना न भूल जायें। आभासी दुनियाँ में ही तल्लीन न रह कर वास्तविकता को भी महसूस करते रहना चाहिये। आपसी रिश्ते और संपर्क व्यक्तिगत रूप से निबाहने पर ज्यादा जोर देना संभवतः अधिक श्रेयस्कर होगा। इस सम्बन्ध में अपने मन की एक बात आपसे साझा करना चाहूँगा। चतुर्वेदी महासभा का अधिवेशन की एक अलग ललक रहती थी। इस आयोजन में देश दुनियाँ के काफी परिचित/ अपरिचित चतुर्वेदियों से मुलाकात होती थी, एक उत्साह का माहौल रहता था। समाज के जिन बान्धवों से लम्बे समय से मुलाकात नहीं हुयी होती थी उन से यकायक मुलाकात कितना आनन्द देती थी शब्दों मे बयान नहीं हो सकता। इस बार कोविड महामारी की परिस्थितियों के चलते अधिवेशन का आयोजन आभासी रूप से हुआ। अधिवेशन तो हो गया परन्तु उसकी भव्यता से समझौता हो गया। बृहत समाज का आपस के मिलन का अवसर खो गया। वह कमी मुझको तो बहुत अखरी। वर्चुअल वर्चुअल ही होता है, वास्तविकता से उसका कोई मुकाबला नहीं।

इस माध्यम की गुलामी का एक और उदाहरण देता हूँ। एक और विड़म्बना आजकल प्रचलन में हो गई है। हम लोग अगर किसी के घर मेल मुलाकात के लिये जाते भी हैं तो कई बार बीच में ये व्हाट्सएप घुसपैठ कर ही डालता है। बार बार लगता है कि न जाने क्या हमसे छूट गया है। हम इसके नशे के अधीन हो कर रह गये हैं। लत लग गई हैं। हम स्वयं से ही दूर होते जा रहे हैं। और न तो इसमे कोई हमारी मदद कर सकता है न ही हमे किसी की मदद की अवश्यकता है। आवश्यकता है तो केवल आत्म मंथन की? वास्तविकता से आत्मसात होने की।

आइये इस समस्या पर मंथन करें, अपने परिवार के लिये समुचित समय निकालें और वास्तविक संबधों के महत्व को समझें। मेरी समझ से इस समस्या से निकलने के लिये आवश्यकता है तो केवल दृढ़ संकल्प की।

कोफ्त

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

मन की वह अवस्था या कष्ट जिस से छुटकारा पाने की स्वभाविक प्रवृति होती है। जीवन की रोजमर्रा कि जिंदगी में अक्सर कुछ ऐसी बातें देखने के लिए मिलती हैं जो हमारा मन किसी तरह से कुबूल नहीं करता। और अक्सर हम जब उस बात का जिक्र करते हैं ,तो यही कहते हैं बड़ी कोफ्त होती है यह देख कर। उस समय हमारी स्थिति ऐसी होती है, ना खाते बनता है और ना निगलते बनता। यह प्रक्रिया अधिकांश अपने परिजनों के साथ होती है या बहुत करीबी प्रिय जनों के साथ होती है। शब्द विन्यास की दृष्टि से देखें तो यह फारसी भाषा का शब्द है। स्त्रीलिंग लेकिन पुरुष और स्त्री दोनों पर लागू होता है।

कोफ्त को दुख तथा रंज भी कहा जाता है

अपना प्रिय जन हो उससे कोई दुराव या छुपाव न हो उसकी कोई वह बात या आदत जो स्वयं को अच्छी नही लग रही।लेकिन संकोच वश न टोक पाते है और न कुछ कह पाते है, मन में जो घुटन या कुढ़न है वह है कोफ्त।

यदि कोई व्यक्ति बाहरी हो और और कुछ ऐसा कर रहा है,जो अपने मन को पसंद नहीं आ रहा। उसे रोक नहीं सकते। हाँ इतना जरूर करते हैं उसकी पीठ घूमते ही अपने साथी से कह देते हैं देखो किस तरह से कर रहा था मन में बड़ी कोफ्त हो रही थी। वही अपना प्रियजन हो तो अकेले में कहते आप ऐसा क्यों कर रहे थे कितनी बार मना किया है, ऐसा मत किया करो देखने में अच्छा नहीं लगता। और वह अपनी बात हंसकर टाल देता है। वह भी मजबूर है अपनी आदत के कारण।

शादी समारोह में हम लोग जाते हैं देखते हैं लोग टेबिल के पास ही प्लेट में खाने का पहाड़ बनाकर वहीं खड़े होकर खाने लगते हैं। ऐसा लगता है दोबारा मिलेगा या नहीं। उन्हें देखकर मन में आता है इन्हें कहें खाने का अकाल नहीं है। लेकिन मर्यादा ऐसा कहने से रुकती और इतना कहकर शांत हो जाते हैं मिस्टर कपूर को देखकर बड़ी कोफ्त हो रही थी। प्लेट इतनी भरी हुई थी कि खाते समय खाना नीचे गिर रहा था।

यह बात तो मिस्टर कपूर की है, लेकिन कभी अपने प्रियजन के बारे में भी कोफ्त होती है। कितनी बार अपने उन

स्नेहीजन से कहा चाय पीते समय आवाज मत किया करो, अच्छा नहीं लगता। लेकिन आदत से मजबूर जब किसी पार्टी में बैठकर चाय पीते हैं तू वही सुड़पने की आवाज। उस समय बड़ी कोफ्त होती है इन्हें कैसे रोका जाए।

यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जो अवस्था या प्रक्रिया हमें पसंद नहीं मन को कष्ट देती है। उस समय मन में स्वभाविक प्रक्रिया उत्पन्न होती है इस कष्ट को कैसे कम किया जाए और उसके लिए एक शब्द सहायता करता है वह कोफ्त है। अपरिचित से परिचय लेने का भी अपना एक तरीका है एक ढंग है,आपका नाम, आप कहां रहते हैं, इतना ही काफी है। लेकिन हमारे प्रियजन को पूरी वंशावली जाने बिना चैन नहीं पड़ता। आपका नाम क्या है पिताजी का नाम कहां के रहने वाले हो मूल स्थान बताओ, बता दिया तो ठीक नही तो अपने पिताजी से पूछना। कभी-कभी मन में अंजाना भय सा लगता है आने वाला अपरिचित कहीं कुछ कहने दे। उस समय की मानसिक स्थिति बड़ी अजीब होती है ना कुछ कह सकते हैं। उनकी बाते सुनने में अच्छी नही लग रही है कोई दूसरा उपाय भी नहीं है यही कोफ्त है।

जिंदगी में सभी तरह के लोगों से पाला पड़ता है कभी ऐसे व्यक्ति से पाला पड़ जाता है जो अपनी कहे जा रहा है दूसरे को बोलने का अवसर ही नहीं दे रहा। बीच में बात काट कर दी बोलो कि मेरी भी सुनिए हां अभी सुनता हूं कहकर फिर शुरू हो जाते उस समय सिवाय कोफ्त के कुछ नहीं कर पाते। कोफ्त केवल महसूस किया जा सकता है, हम इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते, केवल अनुभव करते हैं। मैं तो यही कामना करती हूँ कोई भी कोफ्त का शिकार ना हो। और ना ही मानसिक अशांति और उलझन से गुजरे।

भारत के महान संत श्रृंखला-4 - **श्री त्रेलंग स्वामी**

- **मनोज चतुर्वेदी**, लखनऊ

श्री त्रेलंग स्वामी का जन्म 27 नवंबर 1607 में तेलंगाना प्रदेश के विजयनगरम में विद्यावती और नरसिंह राव के घर हुआ था। स्वामीजी की माता विद्यावती भगवान शिव की बहुत बड़ी भक्त थीं। घंटों भगवान शिव की आराधना करती थीं। एक दिन भगवान शिव ने विद्यावती को सपने में पुत्र का आशीर्वाद दिया। यथा समय विद्यावती के पुत्र हुआ जिसका नाम शिवराम रक्खा गया। शिवराम का लालन पालन बड़े सात्विक माहौल में होने लगा। शिवराम को बचपन से एक ही रुचि थी , अपनी माता से भगवान की कहानियां सुनना। एक दिन विद्यावती भगवान शिव की पूजा कर रहीं थीं , जब उनका ध्यान टूटा तो देखा भगवान शिव की पिंडी में से एक ज्योति निकल रही है और बालक शिवराम के अंदर जा रही है। शिवराम आजीवन अविवाहित रहे और 1669 में 62 वर्ष की आयु में माता पिता की मृत्यु पश्चात अपनी पारिवारिक कर्तव्यों से मुक्त।

शिवराम ने अगले 20 वर्ष एकान्त में साधना करी।सन 1685 में 78 वर्ष की आयु में अपने गुरु श्री भागीरथ नंद से पुष्कर (राजस्थान) में संन्यास की दीक्षा ली।

श्री त्रेलंग स्वामी के चमत्कारों का वर्णन बहुत सी पुस्तकों में दिया है। श्री त्रेलंग स्वामी ने चमत्कारों के लिए कहा है "ईश्वर सर्वशक्तिमान हैं, और वही ईश्वर हम सबके अंदर हैं। सारे चमत्कार उसी ईश्वरीय शक्ति से होते हैं जिसे आज आम आदमी भूल गया है"। श्री त्रेलंग स्वामी के अनेकों चमत्कार उनकी उच्च आध्यात्मिक और यौगिक शक्तियों को दर्शाता है।

एक बार श्री त्रेलंग स्वामी काठमांडू, नेपाल में श्री पशुपतिनाथ मंदिर के बाहर बैठे थे। उसी समय नेपाल राजघराने की कन्या अपने विवाह के लिए सुयोग्य वर की प्रार्थना करने मंदिर पहुंची। मंदिर में राज कन्या ने भगवान शिव की पिंडी पर विशेष पुष्पों की माला चढ़ाई। जब राज कन्या बाहर आयी तो वो माला उसने श्री त्रेलंग स्वामी के गले में पड़ी देखी। राज कन्या को बहुत क्रोध आया और उसने स्वामीजी से पूछा "आपने ये माला भगवान शिव के ऊपर से उठाई है। स्वामीजी ने कहा" मंदिर में वापस जाओ और देखो वह माला कहां है। राज कन्या वापस मंदिर पहुंची तो देखा कि माला भगवान शिव की पिंडी पर ही थी। राज कन्या बाहर आई और देखा वो माला स्वामीजी के गले में पड़ी थी। स्वामीजी ने राज कन्या को पास बुलाया और आशीर्वाद दिया कि उसका विवाह एक राजघराने के सुयोग्य राजकुमार से होगा और वैवाहिक जीवन मंगलमय होगा। कन्या का विवाह बहुत उत्तम लड़के से हुआ और वैवाहिक जीवन खूब लंबा और आनंदमय रहा।

सन 1737 में श्री त्रेलंग स्वामी 130 वर्ष की आयु में बनारस पहुंचे और करीब 150 साल वहां रहे। श्री त्रेलंग स्वामी की आयु करीब 280 साल बताई जाती है और वज़न करीब 140 किलो था हालांकि वे बहुत कम खाते थे और हफ्तों तक उपवास रखते थे।

श्री त्रेलंग स्वामी ने अपने जीवन के बनारस के पचगंगा घाट पर व्यतीत करे। स्वामीजी अधिकतर मौन रहते थे। भारत के एक महान संत श्री राम कृष्ण परमहंस जी , श्री त्रेलंग स्वामी से मिलने बनारस आए। दोनों काफी देर तक मौन भाषा में वार्तालाप करते रहे और खूब प्रसन्न हुए। श्री रामकृष्ण परमहंस जी ने त्रेलंग स्वामी से सिर्फ एक सवाल पूछा "ईश्वर एक है या अनेक" श्री त्रेलंग स्वामी ने मौन भाषा में जवाब दिया "जब आप ध्यान की समाधि में हैं तो ईश्वर एक हैं और जब संसार में देखते हैं तो अनेक हैं। ईश्वर सभी प्राणियों में हैं अतः अनेक।

श्री रामकृष्ण परहंस जी ने श्री त्रेलंग स्वामी के लिए कहा था "ये बनारस के चलते फिरते शिव हैं"

श्री त्रेलंग स्वामी ने शिक्षा दी कि प्रेम से क्रोध को, निस्वार्थ से स्वार्थ को और सत्य से मिथ्या को जीतो। सभी धर्मों का सार है , किसी धर्म के प्रति अश्रध्या मत रखो, व्यर्थ मत बोलो। आत्म ज्ञान , सत्यपात्र को दान और संतोष से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

20 दिसंबर 1887 में 280 वर्ष की आयु में श्री त्रेलंग स्वामी ने अपने शिष्यों को बताया कि वे शरीर छोड़ना चाहते हैं। चंदन की लकड़ी का ताबूत बनाया गया। श्री त्रेलंग स्वामी उसमें ध्यान की मुद्रा में बैठ गए और चेतन अवस्था में शरीर त्याग दिया। ताबूत को गंगाजी में समर्पित कर दिया गया। जब ताबूत ऊपर आया तो शिष्यों ने ताबूत खोल कर देखा तो उसमें सिर्फ फूल थे।

श्री त्रेलंग स्वामी के मित्रों में से श्री राम कृष्ण परमहंस जी, श्री महेंद्र नाथ गुप्त (श्री राम कृष्ण परमहंस जी के शिष्य), श्री लहरी महाशय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी भास्करानंद प्रमुख थे। पाठक गण इसी से अंदाज लगा सकते हैं कि जिसके मित्र ऐसे महान संत हों वो खुद कितना महान होगा।

श्री त्रेलंग स्वामी के चरणों में शत शत नमन।

अतीत का झरोखा

खेल और व्यायाम

- राकेश चन्द्र चतुर्वेदी, मथुरा

प्राचीन तथ्यों के आधार पर कहा जाता है कि खेलकूद मनुष्य की सांस्कृतिक विरासत है अर्थात यह खेल हमें अपने पूर्वजों की धरोहर के रूप में प्राप्त हुए हैं। यह बात अलग है कि मनुष्य जैसे जैसे मानसिक तौर पर मजबूत होता गया। इन खेलों का स्वरूप भी बदलता गया। आरंभ में शारीरिक क्रियाएं जन्म से जीवित रहने के लिए आवश्यक थी। आज के आधुनिक संसार में अनेक स्वास्थ्य संकट हैं। दूसरी और प्रत्येक क्षेत्र में मशीनीकरण हो चुका है। हस्त परिश्रम को अधिक महत्व नहीं दिया जा रहा है। ऐसे समय में खेलकूद की अधिक आवश्यकता है। नहीं तो मानव जीवन के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग सकता है, अर्थात उनका जीवन खतरे में पड़ सकता है। यदि हम स्वस्थ रहना चाहते हैं और एक अच्छा नागरिक बनना चाहते हैं, तो हमें खेलों और व्यायाम की छत्रछाया में आना पड़ेगा। अपने महत्व के कारण खेल और व्यायाम इस स्तर पर हमारे लिए लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। खेल और व्यायाम की आवश्यकता एवं महत्व पर अनेक दार्शनिकों ने बल दिया है - डॉक्टर राधाकृष्णन के अनुसार- प्रकृति में मनुष्य मनोभौतिक है। वे वह शरीर रखते हैं जो बुद्धि के निश्चित नियमों का पालन करता है। उनको अच्छे स्वास्थ्य, खेल और व्यायाम सुयोग्यता में ही रखा जाना चाहिए। मजबूत खेल और व्यायाम की नींव के बिना कोई राष्ट्र महान नहीं बन सकता।

यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार– प्रत्येक मनुष्य का खेल व्यायाम की पहुंच पर मौलिक अधिकार होना चाहिए, जो उसके पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि आज भारत को भगवत गीता के साथ फुटबॉल के मैदान की जरूरत है ,अर्थात बालकों को भाषण, प्रवचनों की आवश्यकता नहीं बल्कि खेल के मैदानों की आवश्यकता है। जिससे वह अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति का प्रयोग करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का प्रयास कर सकता है। इसी प्रयास को देखते हुए किसी लेखक ने यह भी कहा कि वाटर लू की लड़ाई ईंटों के मैदान पर जीती गई थी।

प्लेटो के अनुसार स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है और व्यायाम की आधुनिक समय में निश्चित ही बहुत जरूरत है। खेल और व्यायाम के विस्तृत महत्व का वर्णन कर रहा हूं ::

1. सजग मस्तिष्क

खेल और व्यायाम मस्तिष्क की जागरूकता का विकास करते हैं, क्योंकि सजगता व एकाग्रता शारीरिक क्रियाओं में अत्यंत आवश्यक है।

2. स्वास्थ्य व बीमारियों की जानकारी

खेल और व्यायाम शरीर के ज्ञान व स्त्रोत हैं। असंक्रामक व संक्रामक रोग के लिए स्वस्थ शरीर बाधा हैं। यह ज्ञान आज के समय में अत्यंत जरूरी है।

3. फालतू समय का उचित उपयोग

शारीरिक क्रियाओं द्वारा जिनमें मनोरंजक क्रियाएं सम्मिलित हैं। फालतू समय का उचित प्रयोग होता है। यह आराम में सहायता देता है। मनोरंजक क्रियाओं में भाग लेने से मानसिक तनाव व दबाव को दूर किया जा सकता है।

4. सुंदरता की सराहना

प्रत्येक व्यक्ति को सौंदर्य का ज्ञान होना जरूरी है। उसे सुंदरता को सराहना चाहिए। खेल और व्यायाम द्वारा मानव शरीर को सुडौल बनाया जाता है। एक सुंदर शरीर बनाने के लिए यह एक अच्छा स्त्रोत है। खेल और व्यायाम से बनाये सुंदर शरीर को हर जगह सहाना मिलती है।

5. मानवीय संबंधों की सहायता

खेल और व्यायाम मानवीय संबंधों को बढ़ाने में सहायक है। यह सामाजिक गुणों का विकास करते हैं, जो एक अच्छे नागरिक के लिए जरूरी है। यह गुण है सहयोग, सहानुभूति, मातृभाव, वफादारी, खेल भावना, दयालुता, नेतृत्व आदि सभी गुण खेल और व्यायाम के द्वारा विकसित होते हैं। एक अच्छा खिलाड़ी हमेशा अच्छा नागरिक होता है। वह यह जानता है किस तरह दूसरों के साथ समायोजन करना है।

6. संवेगात्मक विकास

खेल और व्यायाम संवेगात्मक विकास में सहायक हैं। कई शारीरिक क्रियाएं तनाव, दबाव, संवेदनशीलता, आत्मसमर्पण के व्यवहार से व्यक्ति को छुटकारा दिलाती हैं। आक्रमकता को भी शारीरिक क्रियाओं द्वारा समाप्त किया जा सकता है। यह व्यक्ति की घबराहट पर भी नियंत्रण करना सिखाती है।

7. अनुशासन बनाने में सहायक

खेल और व्यायाम अनुशासन बनाने में सहायक है क्योंकि अनुशासन खेल व व्यायाम की रीढ़ की हड्डी है। इसमें हर स्थिति में अनुशासन चाहिए। यह खेलों द्वारा ही संभव है।

8. सहन शक्ति

यह सहन शक्ति को बढ़ाता है। सहन शक्ति मानव के लिए बहुत जरूरी है। जिस व्यक्ति में सहनशक्ति है, वह समाज में अच्छा समायोजित व्यक्ति होगा। खेल और व्यायाम कई ऐसे अवसर देते हैं, जिसमें सहनशक्ति को बढ़ाया जा सकता है।

9.अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण

खेल और व्यायाम व्यक्ति को प्रत्येक स्थिति से निपटने के लिए तैयार करती है। वह व्यक्ति के सद्गुणों का विकास करती है, जो कि एक व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है। चरित्र को बनाने में मदद करती है। खेल और व्यायाम से खुशी, स्वास्थ्य कुशलता और चरित्र के विकास में मदद मिलती है। यह बच्चों को खुश, स्वस्थ और प्रबुद्ध नागरिक बनाने में सहायक है। यह उनके सामाजिक व्यवसायिक एवं नैतिक कार्यों के लिए उनकी सुयोग्यता से भी अधिक सुयोग्य बनाती है। खेल और व्यायाम एक व्यक्ति को जटिलताओं वास्तविकताओं, संकटों और खतरों का सामना अच्छे ढंग से हंसते हुए करने के योग्य बनाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में खेल और व्यायाम की बहुत आवश्यकता है। वास्तव में खेल और व्यायाम व्यक्ति की आयु में वृद्धि करती है। यह नई पीढ़ी को स्वस्थ एवं रचनात्मक बनाने में सहायता करती है। खेल और व्यायाम व्यक्ति के जीवन में वृद्धि व स्वास्थ्य को ठीक रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह व्यक्ति को तंदुरुस्त–चुस्त रखने व आध्यात्मिक व नैतिक शक्तियों का विकास करने में भी सहायता करती है। यह व्यक्ति के कर्म क्षेत्र को विस्तृत करती है तथा व्यक्ति एवं समाज के जीवन को भी समृद्ध बनाती है।

(साभार चतुर्वेदी चंद्रिका नवंबर 2004 अंक)

एक कर्त्तव्य -'अंतिम संस्कार '

- चित्रा चतुर्वेदी, बीमा कुंज, भोपाल
मो. : 9425303470

जन्म से मृत्यु के बीच हिन्दू धर्म में 16 संस्कार माने जाते हैं। हरसंभव प्रयास होता है कि सभी संस्कार पूरी तरह से माने और मनाये जाएं। ध्यान दें तो इन 16 में से 14 संस्कारों में हम खुद शामिल होते हैं,जबकि दो संस्कार पहला (जन्म) और आखरी (मृत्यु),हमारे लिए हमारे अपने करते हैं। पहले ,यानि जन्म संस्कार में तो अक्सर हमारे बड़े शामिल होते हैं और इस पर खुलकर बातचीत सभी के बीच होते है अतः यह पूरे उत्सवपूर्ण माहौल में होता है। किन्तु, बात जब अंतिम संस्कार की होती है तो उससे जुड़ी भय और दुःख की भावनाएं न तो इस पर ज्यादा बातचीत करने देती है और न ही इस पर जानकारी हमारी अगली पीढ़ी तक ठीक से पहुँच पाती है।

नतीजा हम सब देखते हैं। कभी सिर्फ 'कर्त्तव्य' मानकर इसे निभा दिया जाता है तो कभी शॉर्टकट ढूंढ कर 'निपटा' दिया जाता है। 'निभाने' और 'निपटाने' के बीच भावनायें तो होती हैं पर शास्त्रसम्मत विधियां और विज्ञानपरक क्रियाएं किनारे हो जाती हैं। आज इस लेख से मेरी कोशिश है कि उस "अंतिम संस्कार" पर भी कुछ जानकारी साझा हो। यद्यपि परिवारों में काफी तरीके एक दूसरे से भिन्न हो सकते हैं,पर आधारभूत सनातन हिन्दू धर्म में होने वाली क्रियाएं और कारण समान ही हैं, तो शुरुआत इंसान के अंतिम सांस ले लेने के बाद से करते हैं। क्या होता है? क्यों होता है? मान्यताएं क्या हैं? सर्वप्रथम हम देखते हैं कि वह व्यक्ति जो घर पर है और मरणासन हैं, उनके लिए कल्याणकारी कर्म क्या किया जा सकता है।

सर्वप्रथम भूमि को गोबर से लीप कर उस पर तिल,घास और कुश बिछा कर उस पर मरणासन्न व्यक्ति को लेटा देना चाहिए। उसके मुख में पंचरत्न, स्वर्ण आदि डालने से माना जाता है कि पापों का नाश होता है। मरणासन्न व्यक्ति के मुख में गंगाजल एवं तुलसीदल भी रखना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के पास बैठ कर कोई भी व्यक्ति शोक न मनाये, इससे मरणासन्न व्यक्ति को देह छोड़ने में कष्ट होता है। सबसे आवश्यक है इस स्थान पर भगवान का नाम लेना और गीता पाठ करना। धूप, अगरबत्ती जला कर उस स्थान को सुगन्धित धुएं से पवित्र करते रहना चाहिए, इससे अपवित्र या पापी आत्मायें दूर रहती हैं।

अंतिम यात्रा पर जाने वाले व्यक्ति से सामर्थ अनुसार दान कराना भी बहुत पुण्यदायी होता है। ऐसा माना जाता है कि लोहा दान करने से जीव यम की नगरी में नहीं जाता है। सोना दान करने से यम, ब्रम्हा आदि बहुत प्रसन्न होते हैं। रुई के वस्त्र दान करने से यमराज बहुत प्रसन्न होते हैं। सात अनाजों के दान से यमलोक पर तैनात द्वारपाल प्रसन्न होते हैं। फसल से युक्त भूमि का दान करने से जीव को इंद्रलोक की प्राप्ति होती है। इस समय गौदान की भी परंपरा है। ऐसी मान्यता है की गाय की पूँछ पकड़ कर ही जीवात्मा वैतरणी नदी पार करती है।

मरणासन्न व्यक्ति के दोनों हाथों में कुश रखना चाहिए इससे प्राणी विष्णुलोक को प्राप्त करता है। इन सभी बातों का ध्यान रखने से जीवात्मा की अंतिम यात्रा शांतिपूर्वक होती है। जिस समय व्यक्ति की मौत होती है। उस समय घर का माहौल अत्यंत शोकाकुल हो जाता है। कहते हैं इस समय विलाप न करते हुए भगवान का नाम,मंत्र एवं जाप को प्राथमिकता दें। इससे आत्मा के लिए शांति से देह त्याग अपनी यात्रा पर जाना आसान हो जाता है।

मृत्युपरांत शव-संस्कार आरम्भ होता है। शव को स्नान करवा के ,घी-चन्दन का लेप करके ,नए वस्त्र पहनाये जाते हैं। फूल और तुलसी की माला पहना,मुख में सोने का टुकड़ा भी डाला जाता है। अर्थी बना उस पर कुश आसन बिछाया जाता है। उस पर मृतक को लिटाकर नए वस्त्र (कफ़न) से सर से पाँव तक ढँक कर मौली/सुतली से बाँधा जाता है। कहीं कहीं अर्थी पर राम नामी चादर ओढ़ाने का भी चलन है। इसके पश्चात मृतक को फूल,माला एवं पुष्प उसके परिजन चढ़ाते हैं। सौभाग्यवती महिला की मृत्यु होने से उसे लाल चुनरी/लाल वस्त्र और सोलह श्रृंगार कर, दोनों हाथों में लड्डू रख कर विदा करते हैं।

मृतक का बड़ा बेटा श्राद्ध कर्म करता है। स्नान कर,धुले वस्त्र धारण कर दाह संस्कार के लिए तैयार होता है। ऐसा देखने में आया है कि पुरुष शव को बाँधने के लिए मूँज कि मौली-सुतली और सौभाग्यवती महिला के शव को मौली से बाँधा

जाता है। मृतक को उठाने से पहले मिटटी हांडी में अग्नि तैयार की जाती है, जो शवयात्रा में अर्थी के आगे एक व्यक्ति इसे पकड़ कर चलता है। अर्थी उठाने के पूर्व सभी परिजन इसकी परिक्रमा कर फूल,माला,अबीर आदि अर्पित कर अंतिम बिदाई देते हैं। कहीं कहीं सौभाग्यवती महिला पर शॉल ,साड़ी,सुहाग का सामान चढाने की भी प्रथा है।

अर्थी उठाने के पहले पंडित या जानकार बाँधव कुछ पूजन भी करवाता है (पिंड दान आदि) और चार व्यक्ति राम धुन की आवाजें देते हुए ,अर्थी उठा उसे अंतिम यात्रा पर ले जाते हैं। घर, परिवार, गाँव, कॉलोनी वाले मृतक के साथ कुछ कदम चल कर उसे अपना अंतिम प्रणाम देते हैं।इनमें से कुछ व्यक्ति वापस आ जाते हैं और कुछ शवयात्रा में शमशान घाट तक जाते हैं। पार्थिव शरीर का दाह संस्कार ज्यादा विलम्ब से करना उचित नहीं होता है, किन्तु मनुष्य काल–परिस्थितियों से बंधा हुआ है। पार्थिव शरीर ले जाते समय उसका सर आगे और पाँव पीछे रखे जाते हैं। फिर विश्राम स्थल पर मृत देह को एक वेदी पर रखा जाता है इसलिए कि अंतिम बार व्यक्ति इस संसार को देख ले। इसके बाद देह कि दिशा बदल दी जाती है।

कई स्थानों पर संस्कार के लिए अग्नि घर से ले जाने कि प्रथा है। यदि वहीँ व्यवस्था करनी है तो वह इंतजाम भी रखें। अंत्येष्टि संस्कार के साथ पांच पिंड–दान किये जाते हैं। जीवात्मा की शांति के लिए कुछ क्रियाओं का करना आवश्यक है। पिंड–दान भी इसमें से एक है।

प्रथम पिंड, घर के अंदर शव संस्कार करके संकल्प के बाद दान किया जाता है।दूसरा पिंड–दान शवशैया पर शवस्थापना के बाद किया जाता है। तीसरा पिंड मार्ग पर दिया जाता है,यह मृतक के पेट पर रखा जाता है। चौथा पिंड–दान शमशान में करते हैं,इस पिंड को छाती पर अर्पित करते हैं।पांचवा पिंड–दान चितारोहण के बाद करते हैं,यह मृतक के सर पर रखते हैं।

भूमि संस्कारः शमशान घाट पहुँच कर शव को उपयुक्त स्थान पर रखें और पिंड दें।

चिता वाला स्थान झाड़ बुहार कर साफ़ करें। इस स्थान को मंत्र जाप करते हुए जल से सिंचन करें और गोबर से लीप कर स्वच्छ बनाया जाता है। चिता सजाते समय मंत्रोच्चार के साथ धरती मां से श्रेष्ठता के संस्कार मांगते हैं।

शमशान भूमिः यहाँ सिद्धियां निवास करती हैं। दाग देने वाले को चाहिए कि भूमि को प्रणाम कर वहां रहने वाली समस्त शक्तियों को प्रणाम करे। इसके पश्चात पूजन विधि कर चिता को अग्नि दें।दाह संस्कार के समय सामूहिक प्रार्थना का अपना महत्त्व होता ही है। सामूहिक प्रार्थना कपाल क्रिया पूर्ण होने तक करनी चाहिए। कपाल क्रिया के बाद कुछ लोगों को छोड़ शेष सभी व्यक्ति घर लौट जाते हैं। शेष व्यक्ति चिता पूर्णतः जलने के बाद लौट जाते हैं।

गरुण पुराण में कहा गया है, जिस व्यक्ति का अंतिम संस्कार नहीं होता उसकी आत्मा प्रेत बनकर भटकती रहती है और अपार कष्ट पाती है। दाह संस्कार करने का कारण यही है की मृतात्मा को मोक्ष प्राप्त हो। जिन लोगों के मृत्योपरांत शव प्राप्त नहीं होते। उनका पुतला बनाकर दाह–क्रिया की जाती है। इस विधि को नारायण बलि के नाम से भी जाना जाता है। अकाल मृत्यु आदि में भी नारायण बलि द्वारा दाह क्रिया करने का नियम है। दाह क्रिया के पश्चात लोग घाट पर स्नान कर घर जाते हैं। शमशान से जब व्यक्ति घर वापस आते हैं तो घर के दरवाजे पर ही उनके हाथ पैर धुलवा,नीम चबाने को दी जाती है। यह नीम पत्ती थोड़ी सी चबा कर थूक दी जाती है। फिर कुल्ला कर घर में प्रवेश किया जाता है। शमशान से घर वापस आने के बीच के समय में महिलाएं घर की साफ़ सफाई करती हैं। वहां पड़े फूल, गुलाल आदि को पुराने कपड़े से साफ़ किया जाता है। मृतक के उतारे कपड़े, बिस्तर आदि घर के बाहर रख दिया जाता है। जिन्हें बाहर कार्यरत कर्मचारी उठा कर ले जाते हैं।

प्रथम से तीसरे दिन तक भोजन में काली उड़द दाल या काले साबुत उड़द का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाता है। भोजन में हल्दी और बघार (छोंक) का प्रयोग वर्जित है। इन दिनों भोजन घर की बहुएं ही बनाती हैं। बहन–बेटियां इस भोजन को तैयार करने में कैसी भी मदद नहीं कर सकतीं। सब्जी भी बिना छौंक ही बनाई जाती है। मृतक के घर में भोजन दिन में ही बनता है। रात्रिकालीन भोजन परिचितों के घर से बन कर आता है।

पहले दिन से ही पहली थाली मृतक के नाम पर निकलती है जो गाय को खिलाई जाती है। गाय की थाली में पर्याप्त भोजन और लोटे में जल भेजा जाता है। यह थाली तेरहवी के दिन तक निकाली जाती है। गाय के भोजन करने के पश्चात ही घर के सदस्य भोजन करते हैं।

सूतक के 10 दिनों में घर में पूजा पाठ बंद कर दिया जाता है और इसी दौरान पहले दिन की शाम से ही घर में एक दीपक प्रतिदिन मृतक के नाम का जलाया जाता है। एक और दीपक घर के पुरुष प्रतिसंध्या अगले 10 दिन तक पीपल वृक्ष के नीचे मृतक की आत्मा शांति हेतु जलाया जाता है। शाम का भोजन गाय को नहीं दिया जाता है।

दूसरे दिन कोई विधि नहीं की जाती है, पुराने समय में केवल दोपहर के भोजन की थाली मृतक के नाम से निकाली जाती थी,परन्तु आज के समय में सुबह की चाय एवं मृतक की पसंद का नाश्ता भी निकला जाता है। यह क्रम 13वी तक चलता है।

तीसरे दिन घर के पुरुष सुबह के समय चिता से अस्थि

चुनने जाते हैं। यह अस्थियां चुन कर, दूध पानी से धोकर ,किसी मटकी में रख कर बंद कर दिया जाता है। फिर इसे अपनी सुविधानुसार किसी पवित्र नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। पवित्र नदी जैसे गंगा में अस्थि विसर्जन के पीछे महाभारत की एक मान्यता है कि जितने समय तक गंगा में व्यक्ति की अस्थि पड़ी रहती है व्यक्ति उतने समय तक स्वर्ग में वास करता है।पवित्र नदियों में अस्थि विसर्जन का मुख्य कारण यही है कि मृत व्यक्ति अपने द्वारा किये गए पापों से मुक्त हो जाता है और उसे स्वर्ग कि प्राप्ति होती है।

तीसरे दिन के दोपहर के भोजन में पकोड़ी का झोर ,साबुत उड़द,चावल,रोटी और सब्जी बनती है। भोजन में छौंक और हल्दी का प्रयोग नहीं होता है। इस दिन के भोजन में एक अलग तरह का हलुआ बनता है, जो तीन दिन के बचे परोथन को मिलाकर तेल में बनाया जाता है। यह हलुआ जिन लोगों के पिता जीवित नहीं हैं,केवल उन्हें ही खिलाया जाता है। आज के समय में यह हलुआ मुख्यतः गाय को खिलाया जाता है।

तीसरे दिन से गरुण पुराण का पाठ भी बैठाया जाता है। यह पाठ एक हफ्ते चलता है,इस पाठ कि मान्यता है कि इससे मृत आत्मा को शांति और मोक्ष मिलता है। हमारे मन में कई सवाल आते हैं,मृत्यु के बाद इंसान के अस्तित्व का क्या होता है? वो कहाँ जाता है आदि। ऐसे सभी सवालों का जवाब गरुण पुराण में मिलता है। चौथे से नौवे दिन तक कोई विधि अलग से नहीं निभाई जाती। दसवे दिन सूतक उतारा जाता है। पुरुष, घाट या किसी मैदान आदि में जाकर बाल,दाढ़ी आदि का मुंडन करवाते हैं। जो मुंडन नहीं करवाते वह कटिंग करवाते हैं। इसमें नाखून आदि कटवाना भी शामिल है। इस दिन घर कि महिलाएं घर कि सफाई करवाती हैं। घर के परदे,चादर,तकिया खोल आदि बदला जाता है। जहाँ यह सब काम करने वाला कोई नहीं होता वहां सम्पूर्ण घर और सामान पर गंगाजल छिड़क दिया जाता है।

मुंडन कराने के साथ कि भावना यह है कि मृत व्यक्ति के प्रति हम अपनी श्रद्धा और सम्मान व्यक्त कर रहे हैं। दूसरा कारण है कि इस तरह हम अपने शरीर को किसी भी प्रकार के संक्रमण से बचने के लिए साफ़ और शुद्ध कर लेते हैं। इस दिन दोपहर के भोजन में चावल नहीं बनता है।कई घरों में इस दिन दोपहर का भोजन रिश्तेदारों के घर से आता है। 10वे दिन शाम को जलने वाले दिए बदल दिए जाते हैं या दिया जलाना बंद कर देते है। कहीं कहीं गरुण पुराण की जगह गीता पाठ किया जाता है। यह पाठ घर कि बेटियां भी कर सकती हैं।

11वे दिन को एकादशा या उठावना भी कहते हैं। इसमें सुबह घर के पुरुष मृतक का उपयोग किया सामान जैसे कपडे,बिस्तर, लिहाफ,स्वेटर आदि दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं साबुन, कंघा, ब्रश आदि ले कर घर से घाट या किसी मैदान/बगीचे में जाते हैं वहां पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ के ये पूजा करते हैं। इस पूजा को कर्मकांडी ब्राह्मण ही कराता है। मृतक के पसंद का भोजन,चाय,दूध,घर से बना कर भेजा जाता है या बाजार से ही भोजन खरीदा जाता है। यह सभी सामान और भोजन कर्मकांडी ब्राह्मण को दिया जाता है। इस दिन कि पूजा में पिंड दान के साथ मृत आत्मा को पितरों के बीच स्थान दिया जाता है या यूँ भी कह सकते हैं कि मृतात्मा को पितरों में मिला दिया जाता है। 11वे दिन से घर में सामान्य रूप से आवागमन आरम्भ हो जाता है। जब पुरुषवर्ग उठावना करके घर आते हैं तो परिवार और खानदान के लोगों के साथ पूड़ी सब्जी आदि का भोजन करते हैं। घर में भोजन सामान्य विधि अनुसार बनता है। तेल,हल्दी,छौंक आदि सब का प्रयोग आरम्भ हो जाता है। गाय की थाली निकलना जारी रहता है।

बचपन से सुना है औरतों का बारहवा होता है और पुरुषों कि तेरहवी होती है। यह रिवाज गांव के हिसाब से बदल भी जाता है। जैसे औरतों का काम ग्यारहवें दिन और पुरुषों का काम बारहवें दिन करते हैं। इस काम में सभी लोग सुबह स्नान आदि करके पंडित कि मदद से घर में पूजन हवन आदि करते हैं। इसके पश्चात ब्राह्मण भोज कराया जाता है।यह भोज १३ ब्राह्मणो को कराया जाता है। तत्पश्चात उन्हें पद दे कर विदा किया जाता है। पद के सामान में पुरूषों के 5 कपड़े (धोती,कुरता, बनियाइन,रुमाल और गमछा), इसी प्रकार महिलाओं के भी 5 वस्त्र किये जाते हैं, इस सामान में पद का लोटा,बड़ा लड्डू, तुलसी कि माला, धार्मिक पुस्तक जैसे गीता, सुन्दर काण्ड , छाता, छड़ी, चप्पल, सिक्का या रूपए के साथ ऐसे १३ समान पद में दिये जाते हैं। ऐसे 13 पद दिए जाते है। कहीं कहीं सुविधानुसार 1 पद पूरा और और बाकी के आंशिक भी किये जाते हैं। यह पद हम जिसे १३वी का भोजन करा रहे हैं उन्हें या १३वी का पूजन–हवन कराने वाले मुख्य ब्राह्मण को भी दे सकते हैं। फिर सभी ब्राह्मणो को श्रद्धापूर्वक दक्षिणा देकर विदाई दी जाती है। ध्यान रखना है कि दागिहा व्यक्ति को ब्राह्मणो के साथ भोजन करने अवश्य बैठाया जाता है, किन्तु इसे १३ ब्राह्मणो कि गिनती में नहीं गिना जाता। ब्राह्मण के रूप में भांजे–भांजी को खिलाना विशेष है।

हमारे समाज में एक चलन है कि १३वी के दिन पूजन,हवन,ब्राह्मण भोज और रिश्तेदारों आदि के भोजन के बाद शाम के समय आँखें धुलवाई जाती हैं। इस प्रथा में घर कि सभी महिलाएं एक स्थान पर एकत्रित होती हैं और घर कि बहन–बेटी एक पात्र में जल लेकर सबके सामने जाती हैं, जिसके सामने जाती हैं वह महिला दो ऊँगली उस जल में डूबकर अपनी आँखों में लगा लेती हैं। इस प्रथा के पीछे छिपी भावनाएं

हैं कि आज से हमारे घर में शोकाकुल वातावरण के आंसू हम पोंछ रहे हैं और भविष्य में शोक और गम के आंसू हमारी आँखों में कभी न आएं। हे भगवान शोक और गमी से हम सब कि रक्षा करना। इसके पश्चात घर के सभी सदस्य मंदिर जाकर भगवान् के दर्शन करते हैं। इस प्रकार मृत्युपरांत १३ दिनों के काम और विधियां समाप्त होती हैं|

अब बरसी होने तक रोज दिन में मृतात्मा के नाम का भोजन और पानी गाय को खिलाया जाता है। महीने की प्रत्येक अमावस्या को एक ब्राह्मण भी मृतात्मा के नाम का जिमाया जाता है,जो लोग सालभर थाली नहीं निकाल पाते वे अमावस्या को ब्राह्मण भोज करा कर उसे एक मास का सीदा/राशन दे देते हैं।

दीवाली की अमावस्या सबसे बड़ी अमावस्या (काल रात्रि) मानी जाती है। मृत्योपरांत पहली दिवाली मृतात्मा के नाम से मनाई जाती है। इसके अंतर्गत छोटी दिवाली की रात रसोईघर को साफ़ कर ब्राह्मण और परिवारजनों के लिए भोजन बनता है। इसमें विशेष महत्व पुआ का होता है। ९ पुए बना कर घर बंद करते समय ,घर कि बाहरी देहरी पर किसी बर्तन में रख कर तवा उल्टा करके ढक दिए जाते हैं। ब्रम्ह मुहूर्त में घर के लोग इसकी विधि पूरी करने निकल जाते हैं। ये पुए ३–३ करके जल,थल और नभ के माने जाते हैं। जैसे ३ पुए किसी नदी या तालाब में विसर्जित किये जाते हैं। ३ पुए किसी मुंडेर पर गगनचर (पक्षी) जैसे चिड़यि–कौओं के खाने के लिए रख दिए जाते हैं। 3 पुए थल/पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों जैसे गाय आदि को खिला दिए जाते हैं। घर के लोग इस प्रक्रिया को पूरा कर हाथ पाँव धो,कुल्ला कर के घर में घुसते हैं। अब दिन में ब्राह्मण को पूड़ी,पुआ,सब्जी,मिठाई का भोजन करा,घर वाले भी यही भोजन ग्रहण करते हैं और यह रस्म यहीं समाप्त हो जाती है।

वर्ष भर में महिलाओं की ग्यारह और पुरुषों की 12 अमावस्या खिलाई जाती है। कहीं कहीं तो अंतिम अमावस्या के साथ ही बरसी भी कर दी जाती है तो कुछ लोग अंतिम अमावस्या पर ब्राह्मण/ब्राह्मणी को भोजन करा के वस्त्रादि दान कर विदा कर देते हैं। इस रीति को उठनी कहते हैं और बरसी की तिथि आने पर करते हैं। बरसी के दिन सुबह से परिवार के सभी सदस्य स्नान कर शुद्ध हो कर पंडित द्वारा कराये जा रहे पूजन–हवन में भाग लेते हैं। यह दिन भी मृतक और पूर्वजों के निमित्त होता है। हवन, आरती संपूर्ण होने के बाद भोजन कि पांच पत्तल निकली जाती हैः गाय,कुत्ता,कौआ,अग्नि और भिखारी के लिए।

अब बारी आती है ब्राह्मण भोज की , बरसी के दिन 12 ब्राह्मण जिमाये जाते हैं और इन्हे जीमने के बाद पद दिए जाते हैं।मृतक की बरसी करने के बाद ही उसका वार्षिक एवं तिथि श्राद्धः करना आरम्भ करते हैं।बरसी के बाद ही घर में मांगलिक कार्यों कि शुरुआत होने लगती है।

मृतक के चार वर्ष पूर्ण होने पर चौबर्सी करने की प्रथा है। चौबर्सी के दिन भी पंडित द्वारा पूजन–हवन पिंड दान की प्रक्रिया पूर्ण कराई जाती है। फिर वही 5 पत्तल में गाय,कुत्ता,कौआ,अग्नि और भिखारी के लिए निकाल कर उन्हें देते हैं।

चौबर्सी पर चार ब्राह्मण जिमा कर उन्हें पद आदि देकर विदा करते हैं। और अब मृतक के नाम के बस श्राद्ध कर्म उनकी तिथि पर किये जाते हैं।

कुछ बातें स्मरणीय हैंः

1. सामान्यतः दाह संस्कार सूर्यास्त के बाद नहीं किया जाता है।
2. सन्यासी–महात्माओं के लिए मृत्युपश्चात भूमिसमाधि या जलसमाधि देने का विधान है।
3. मृत्यु को विलक्षण और भयावह न समझें, यह आत्मा कि मुक्ति के लिए आवश्यक है। गरुण पुराण में कहा गया है कि शास्त्र सम्मत विधि से ही अंतिम संस्कार होने से और शेष विधियां 13 दिन कि पूर्ण होने से मृतक कि आत्मा को मुक्ति ,मोक्ष और शांति मिलती है।
4. तेरहवी,बरसी और चौबरसी पर ब्राह्मण भोज के पहले भोजन के 5 भाग गाय,कुत्ता,कौआ,अग्नि और भिखारी का भोजन निकाल उन्हें देना आवश्यक है।
5. तेरहनवी, बरसी और चौबर्सी के हवन के पूर्ण होने पर हवन कि अग्नि तुरंत ठंडी करके इसकी राख आदि जल में प्रवाहित कर दी जाती है।

हवन–पूजन के समय मृतक कि फोटो पर फूल माला टीका लगा कर वहां रखें|

परिस्तिथि जन्य समय में 13 दिन के मृतक के काम/विधि 3 या 4 दिन में ही पूरे कर दिए जाते हैं यानी तीसरे दिन अस्थि विसर्जन के बाद चौथे दिन ही तेरहंवी,बरसी और चोबरसी एक साथ कर दी जाती है।

देखने में आता है यह विधि अब परिस्तिथि जन्य कम स्वेक्छिक रूप से ज्यादा जोर पकड़ रही है। मेरा मानना है कि यह कर्म दिनों और विधि के हिसाब से पूरा किया जाये जिससे हमारे बच्चे हमसे इन विधियों को देखें,सीखें और समझें। जीवन है तो मृत्यु भी अटल सत्य है,हम भी चाहेंगे कि मृत्यु पश्चात हमारे काम भी पूर्ण शास्त्र सम्मत तरीके से हों। यह लेख मेरे लिए संभव नहीं था ,अगर समाज की बुज़ुर्ग बहिनों से जानकारी न मिलती। उन सब को आभार के साथ आशा करती हूँ कि इस लेख से अंतिम संस्कार और उसके पीछे मौजूद तथ्यों को समझने में मदद मिलेगी।

वैकुंठ धाम की ओर...

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ
मो.: 8707894349

(यह आलेख पं सुरेश चन्द्र'आचार्य जी'की पुस्तक "षोडश संस्कार एवं रीति-रिवाज" से प्रेरित है।)

जीवन नश्वर है, लेकिन मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज संस्कार एवं परम्पराओं के दायरे में चलता है, हमारे संस्कारों का उदगम वैदिक सनातन संस्कृति के सबसे प्राचीन ग्रंथ--ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद व अर्थववेद

है। यही हमारे प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक हैं। चारों वेदों के ज्ञान एवं परम्पराओं के प्रचारक व रक्षक ही चतुर्वेदी कहलाये (यह मेरा व्यक्तिगत विचार है।)

हमारे समाज में जीवन में परिवर्तन के हर पड़ाव को प्रक्रियागत आयोजन (संस्कार) के साथ स्वीकार किया जाता है। अपने समाज में गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक सोलह संस्कारों की मान्यता है। हमारे विज्ञ पूर्वजों ने संस्कारों की प्रक्रिया को इतना लचीला व गतिशील बनाया है कि परिवर्तनशील समय व व्यवस्थाओं के अनुरूप सामंजस्य स्थापित हो जाता है।यह जानकारी पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती गई। जब हमारा जीवन सामूहिक व संगठित था तो कोई दिक्कत नही थी। 21 वी सदी की बदलती परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के कारण हम सामूहिक नहीं बल्कि व्यक्तिगत जीवन प्रणाली के अधीन हो गये है। लेकिन अलिखित विधान के कारण नयी पीढ़ी को संस्कारों की उचित जानकारी नहीं मिलती, परिणामस्वरूप इस पीढ़ी का रुझान संस्कारों से दूर होता दिखाई पड़ता है।आज की पीढ़ी भी अपने स्वजनों का अंतिम संस्कार पूर्ण विधि-विधान से करना चाहती है। इस लेख में अंत्येष्टि संस्कार की जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

हमारा नश्वर शरीर पंच भूतों (क्षिति,जल,पावक,गगन, समीर) से मिलकर बना है। शरीर से जीवात्मा के परमात्मा की ओर पलायन को ही मृत्यु का नाम दिया गया। जीवन रहित शरीर मात्र शव बन जाता है। शव के पंच भूतों के प्रकृति से पुर्नमिलन प्रक्रिया को दाह - संस्कार (अंत्येष्टि) कहा जाता है। हर जगह काल एवं परिस्थितियों के अनुसार अंतिम संस्कार प्रक्रिया को धार्मिक कर्मकांड माना जाता है। हिन्दू धर्म में मृत शरीर की अग्नि आहुति देने की प्रक्रिया को दाह-संस्कार कहते हैं।

दादाजी की तबीयत गंभीर है, कभी भी खबर आ सकती हैं...अरे दादाजी नहीं रहें। कुछ पलों के अंतराल पर ही नियति का खेल समाप्त हो जाता है। भगवान की असीम कृपा है कि मृतक के निकटवर्ती चंद क्षणों के विचलन के साथ ही आत्मीयजन भी उस व्यक्ति को शव कहकर शीघ्र अंत्येष्टि करने का प्रयास करते हैं।

श्रीमद् गीता के अध्याय 2-22 में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,नवानि गृहणाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संक्रांति नवानि देही।।

अर्थात जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर,नये वस्त्रों को ग्रहण करता है। उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर को त्याग कर नये शरीर को ग्रहण करती हैं।

मान्यता है कि यथासंभव मृत्यु के पूर्व मृतक को जमीन पर ले लें। मृत शरीर की नाक में रुई लगाकर दोनों पैरों के अंगूठों को आपस में बांध देते हैं। फिर शव को स्वच्छ स्थान पर इस तरह रखते हैं कि सिर उत्तर की ओर तथा पैर दक्षिण की ओर रहें। मृत शरीर के मुख में तुलसी दल, गंगा जल या स्वर्णजल डालते हैं। उस स्थान पर धूपबत्ती जलाकर भजन कीर्तन की धुन बजाये। इसके बाद पड़ोसियों, रिश्तेदारों व निकटवर्ती लोगों को दुःखद समाचार देते हैं। फिर किसी जिम्मेदार व्यक्ति को आवश्यक व्यवस्थाएं करने का आग्रह किया जाता है। निकटवर्ती लोगों को मृतक के घर पहुंचने का प्रयास करना चाहिए। प्रायः लोग श्मशान घाट पहुंचते हैं।

आवश्यक सामग्री आने के बाद परिचित लोग सुतली-कलाबा से बांस को बांधकर अर्थी (ठिठरी) बनाते हैं। (कुछ लोग कहते हैं---बाप के बेटे अर्थी नहीं बांधते।) इसके बाद शव को स्नान कर नये वस्त्र धारण कराते हैं। सुहागिन महिला को चुनरी एवं अन्य लोगों को रामनामी से ढकते हुए अर्थी पर पुष्प माला डाल कर घर से बाहर निकलते हैं। शव यात्रा में पैसे,फूल,मखाने, बतासे भी लुटाए जाते हैं।

शरीर की संरचना पंच भूतों से होती है,अतएव घर से चितारोहण तक पांच पिण्ड (जौ आटा,तिल) के दान का विधान है। पहला घर की देहरी पर,दूसरा निकट के मंदिर या पीपल पर व अन्य तीन चिता पर किया जाता है। कहीं-कही सभी पिण्ड दान चिता पर ही करते हैं। श्मशान घाट चिता सजायी जाती है। यदि संभव हो तो शव को नदी स्नान करने के बाद चिता पर रखते हैं, फिर निकटवर्ती लोग धार्मिक कृत्य मानकर चिता पर लकड़ी रखते हैं। चिता में मुखाग्नि देने का

काम सबसे बड़ा या सबसे छोटा लड़का करता है, सुहागिन स्त्री को मुखाग्नि देने का काम उसका पति करता है। अब पुत्र न पर होने पुत्री भी मुखाग्नि देने लगी है। अंत्येष्टि प्रक्रिया में दामाद का हाथ लगाना वर्जित है, यदि मजबूरी हो तो संकल्प लेकर कार्यवाही करते हैं।

मैनपुरी एवं सिंकदरपुर को छोड़कर अन्य सभी स्थानों पर मुखाग्नि देने वाला बाल बनवाने के बाद स्नान करने के साथ ही नया जनेऊ एवं नये वस्त्र पहन कर कार्यवाही सम्पादित करता है। चिता पर पंडित के अनुसार पूजन कर पिण्ड दान करने के बाद परिक्रमा करने के साथ ही मुखाग्नि देते हैं।

कपाल क्रिया मतिष्क की हड्डी कठोर एवं गोलाकार होने की वजह से जल्दी भस्म नहीं होती,अतएव शरीर के अन्य अंगों के भस्म होने के बाद (लगभग एक घंटा) बांस के आगे हांडी में घी सहित यज्ञ सामग्री को बांध कर अंतिम आहुति स्वरूप जलते शव के सिर पर फोड़ देते हैं। मान्यता है कि कपाल क्रिया करने से मृत जीव का मतिष्क सीमाबद्ध एवं संकुचित न रहकर व्यापक आधार पर विकसित होकर नवजीवन के लिए खुलकर अग्रसरित हो। दाह संस्कार सूरज या गंगा को साक्षी मानकर किया जाता है,अतएव गंगा किनारे दाह-संस्कार दिन-रात होता है, लेकिन अन्य स्थानों पर सूर्यास्त के बाद यथासंभव दाह-संस्कार नहीं करते हैं। यदि अंत्येष्टि गंगा किनारे होती हैं तो लगभग तीन घंटे में चिता को पूर्ण रूप से शांत करने के बाद अस्थि विसर्जन करने के बाद ही वापस लौटते हैं। अन्य स्थानों पर दूसरे या तीसरे दिन जाकर चिता शांति कर अस्थि संचय करते हैं, फिर गंगा में अस्थि विसर्जन करते हैं। लखनऊ एवं भोपाल में कपाल क्रिया के बाद श्मशान घाट पर ही मृतात्मा की सदगति व शांति के लिए दो मिनट मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। दाह-संस्कार के बाद निकटवर्ती लोग दाग देने वाले को घर पहुंचा कर ही अपने घर जाते हैं। घर में अंदर जाने से पहले नीम पत्ती या कुछ नमकीन चखने की परम्परा है। संस्कार करता शुद्धि (सूतक) तक जमीन पर ही सोता है तथा अलग बर्तन में खाना खाता है। अस्थि संचय करने के बाद महापात्र किसी निर्धारित स्थान पर पीपल के वृक्ष पर पानी भरकर घट(हांडी) लटका कर दीपक जलाते हैं, फिर सूतक के दिन तक रोजाना शाम को दाहकर्ता अकेले न जाकर किसी के साथ जाकर घट में पानी भरकर दिया जलाता है।

मृतक के घर अंत्येष्टि वाले दिन काली उर्द की दाल के साथ बिना पसाया भात व रोटी बनती हैं,भोग नहीं लगता, सर्वप्रथम संस्कार कर्ता भोजन की थाली गाय को देता है। सूतक के दिन तक शाम का भोजन नहीं बनता,प्रायः किसी निकटवर्ती के यहां से शाम का भोजन आ ही जाता है। दूसरे दिन भी इसी प्रकार भोजन बनता है। वर्षी तक रोज प्रथम थाली गाय को खिलानी चाहिए। तीसरे दिन दाहकर्ता घर से दूर निकटवर्ती लोगों के साथ मृतक के लिए तीन पिंडदान करता है, प्रायः अस्थि संचय के साथ ही होता है। तीसरे दिन से पाक विधि में परिवर्तन होकर हल्दी का प्रयोग एवं चावल पसाना शुरू हो जाता है। भोजन में पकौड़ी का झोर,साबुत उर्द, चावल,गुलगुला और रोटी बनती है।प्रायः सूतक के दिन तक उर्द की दाल, चावल, रोटी का ही भोजन बनता है। सूतक तथा तेरहवीं के लिए सोमवार, वुधवार, शुक्रवार के दिन को प्राथमिकता दी जाती हैं। नौवें या दसवें दिन शुद्धि (सूतक) के दिन घट फोड़ने के बाद पारिवारिक सदस्य एक साथ बाल बनवा कर स्नान करते हैं, महिलाएं भी एक साथ सिर धोकर स्नान करती हैं।

वर्तमान समय व परिस्थितियों के कारण कुछ लोग मजबूरी में तीसरा के दिन ही शांति हवन कर बाल बनवा कर शुद्धि कर लेते हैं। ग्यारहवें दिन एकादशा होता है। उस दिन किसी बाग, घाट या मंदिर में जाकर मृतक के नये-पुराने वस्त्र,शैय्या साज के साथ अन्य उपयोगी सामग्री देने के बाद भोजन करवाकर महापात्र को विदा करते हैं।

पहले एकादशा के दिन ही मृत्यु भोज होता था, उसके बाद दाहकर्ता को मंदिर ले जाते हैं। आजकल बारहवें या तेरहवें दिन तेरहवीं मनाते हैं, इस दिन सुबह कर्ता शांति हवन करता है,हवन आहुति के लिए तेरह पुआ बनाये जाते हैं। हवन समाप्ति के पश्चात तुरंत तिलक,कलावा हटाकर हवन भस्म को विसर्जित कर देते हैं। उसके बाद पारिवारिक सदस्य कर्ता को मंदिर ले जाते हैं। तेरहवीं के दिन तेरह पद (पुरुष के लिए पुरुष वस्त्र एवं महिला के लिए महिला वस्त्र के साथ धार्मिक पुस्तक व अन्य सामग्री) का दान किया जाता है। एक पद हवन करने वाले पंडित तथा अन्य अपने मान्य को दिये जाते हैं। सामाजिक ब्रह्म भोज के पूर्व तेरह ब्राह्मण को कर्ता के साथ भोजन करवाकर दक्षिणा देने का विधान है। पुरुष के संदर्भ में पुरुष तथा महिला के संदर्भ में महिला ब्राह्मण को प्राथमिकता देते हैं। अपने समाज में ब्राह्मणों में मान्य व पारिवारिक सदस्यों को वरियता देते हैं। अपने समाज में मृत्यु शोक एक वर्ष तक मनाया जाता है, इन्हीं ब्राह्मणो में उस पंडित या पंडिताइन को भी शामिल किया जाता है,जो साल भर अमावस्या के दिन भोजन करेगा। वर्तमान समय में गाय तथा उपयुक्त ब्राह्मण नही मिलने के कारण प्रायः लोग हर महीने का राशन किसी अनाथ, महिला,बृध्द या कुष्ठ आश्रम में देने को प्राथमिकता देते हैं। मृतक के परिजनों में कुछ लोग साल भर एकादशी व्रत भी रखते हैं। अपने समाज में मृत्यु वर्ष की दीवाली पर विशेष श्राद करते हैं, चतुर्दशी की रात्रि में भोजन के साथ ही छः या नौ पुआ भी बनाते हैं, दीवाली के भोर में कर्ता किसी के साथ पुओ को तीन भागों में बांट लेता है, पहले भाग को घर की देहरी पर तवे

से दबाकर रखतें हैं, फिर श्मशान घाट पर दूसरे भाग को पीपल या मंदिर पर रखकर तीसरे भाग के पुआ को नदी में समर्पित कर वगैर पीछे देखे घर लौटते हैं। देहरी पर रखे पुआ गाय को खिला देते हैं। दीवाली के दिन सभी बासा भोजन करते हैं। बारहवीं अमावस्या या तिथि के अनुसार बारहवें महीने में वर्षी मनाकर साल भर के शोक समाप्ति का संदेश दिया जाता है। वर्षी पर तेरहवीं की तरह शांति हवन कर तुरंत विसर्जन किया जाता है, वर्षी पर बारह ब्राह्मण को भोजन कराने के बाद सामाजिक भोज होता है। वर्षी पर बारह पदों का भी दान करते हैं। वर्षी की तरह ही तिथि के अनुसार चार वर्ष बाद चौवर्षी मनायी जाती हैं। इसमें चार पद दान करने का विधान है।

शास्त्र सम्मत कथन है**

सम्मान्य सादर मृत्युजिर्वनस्याःत्तिऽतिथि।नियन्त सर्वविश्वस्य तस्मात्प्रसन्न चेतना।।

अर्थात मृत्यु समस्त जगत की नियन्ता है, जीवन की अंतिम अतिथि है,अतएव प्रसन्नचित होकर आदर योग्य है।

हमें प्रतिवर्ष एवं पितृपक्ष में तिथि के अनुसार अपने पूर्वजो का श्राद्धकर्म श्रद्धा के साथ करना चाहिए।

हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे...

- विधि-जिगिषा (आशियाना, लखनऊ)

खाने पीने की चीजों से भरे है...
कहीं पर फल है तो कहीं आटा-दालें है,
कहीं पर मिठाई है, कहीं पर मसाले है ,
चलो, फलों से ही शुरू कर लेते है,
एक एक कर सबके मजे लेते है...

आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,
कभी अंगूर खट्टे हैं,
कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं,
कहीं दाल में काला है,
तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती है,

कोई डेड़ चावल की खिचड़ी पकाता है,
तो कोई लोहे के चने चबाता है,
कोई घर बैठा रोटियां तोड़ता है,
कोई दाल भात में मूसरचंद बन जाता है,
मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,
तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है,

सफलता के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते है,
आटे में नमक तो चल जाता है,
पर गेंहू के साथ, घुन भी पिस जाता है,
अपना हाल तो बेहाल है, ये मुंह और मसूर की दाल है,

गुड़ खाते हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं,
कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी ऊँट के मुंह में जीरा है,
कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है,

किसी के दांत दूध के हैं,
तो कई दूध के धुले हैं,

कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है,
किसी को छटी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक पीता है,
और दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है,

शादी बूरे के लड्डू हैं, जिसने खाए वो भी पछताए,
और जिसने नहीं खाए, वो भी पछताते हैं,
पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते है,
और शादी के बाद, दोनों हाथों में लड्डू आते हैं,

कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी के मुंह में घी शक्कर है,
सबकी अपनी अपनी तकदीर है...
कभी कोई चाय-पानी करवाता है,
कोई मख्खन लगाता है
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुंह में पानी आ जाता है,

भाई साहब अब कुछ भी हो,
घी तो खिचड़ी में ही जाता है, जितने मुंह है, उतनी बातें हैं,
सब अपनी-अपनी बीन बजाते है, पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है, सभी बहरे है, बावरें है ये सब हिंदी के मुहावरें हैं...
ये गज़ब मुहावरे नहीं बुजुर्गों के अनुभवों की खान हैं...
सच पूछो तो हिन्दी भाषा की जान हैं..!

अंतिम विदाई

- राजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (कोलकाता)
संरक्षक, महासभा

चौबों में ग्राम व गोत्र के अनुसार अंतिम संस्कार थोड़े बहुत भिन्न है। मृत्यु के बाद दक्षिणायन दिशा में पैर करके लिटाने की प्रथा है। बाद में परिवार के चार व्यक्ति उठाकर राम नाम सत्य है कहते हुए दाह करने को सजाई लकड़ियों की सैया पर रख देते हैं। पति, भाई या पुत्र अग्नि प्रज्वलित कर दाह संस्कार करने की प्रथा है। ब्राह्मण होने के कारण दाह कर्म करने का अधिकारी जनेऊ धारी बंधु को ही है। दाह संस्कार के समय जनेऊ उल्टा अर्थात सीधे कंधे पर से पहना जाता है। तत्पश्चात सीधा कर बांये कंधे पर पहन लेते है। कच्छ–मच्छ के लिए थोड़ा पिंड छोड़ देते हैं। बाकी बची राख अथवा लकड़ी नदी में प्रवाहित कर देते हैं।अंतिम यात्रा से पूर्व सुहागिन महिला का पूरा सिंगार करने की प्रथा है। पिंडदान करके पीपल के पेड़ के नीचे दीपक जलाने की प्रथा है। 7 से 9 दिन के बीच शुद्धि होती है। समाज में सम्मिलित होने को, ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं। समाज को अथवा ब्राह्मण को भोजन कराने से शुद्धि हो जाती है। 11 माह बाद वर्षी तथा 4 वर्ष का चौवर्षी करने की प्रथा है। पूरे साल मृतक के नाम की भोजन की थाली निकालते हैं एवम उसे गाय को खिला देते हैं।

अंतिम संस्कार में ध्यान रखने वाली बातें

- शारदा चतुर्वेदी, भोपाल

1. मरणासन्न व्यक्ति को जमीन पर लिटाते वक्त उसका सर उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए।
2. सामान्यता दाग देने वाला व्यक्ति दाह संस्कार से पूर्व बाल देता है व परिवार के अन्य परिजन शुद्धि के दिन बाल देते हैं। शुद्धि के दिन दाग देने वाले के भी दोबारा बाल दिए जाते है।
3. दाग देते वक्त, अस्थि संचय के समय एवं एकादशी पूजन के दिन दाग देने वाला व्यक्ति उल्टा जनेऊ पहनता है अर्थात सीधे करने से विधि के उपरांत उसे सीधा कर दिया जाता है अर्थात बाएं कंधे से।
4. गंगा किनारे या अन्य मोक्षदायनी नदी किनारे दाह संस्कार दिन रात होते हैं।
5. शुद्धि तक शाम का खाना रिश्तेदारों के घर से आने की प्रथा है। ऐसा नहीं होने पर सुबह ही अधिक मात्रा में शाम के लिए भी खाना बना लिया जाता है या बाहर से भी मंगाने में कोई दोष नहीं है।
6. सुहागिन महिला के पद में तुलसी की माला और सफेद चंदन का टुकड़ा नहीं रखा जाता है।
7. तेहरबी के पद में तेरह सामान होते हैं।
9. भावना वश दाग देते समय अन्य परिजन भी उसमें अपना हाथ लगाते हैं, लेकिन आगे के कर्म वही व्यक्ति करता है जिसने कपाल क्रिया की हो, अर्थात दगिया वही कहलाता है जिसने कपाल क्रिया की हो।
10. दगिया को 13 दिन पूर्णता ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। घर से बाहर निकलते वक्त कोई भी लोहे की वस्तु आवश्यक रूप से जेब में रखें और संभव हो तो घर पर अकेले बाहर ना जाएं किसी के साथ जाएं।
11. जिस व्यक्ति को मासी के दिन (तिथि या अमावस्या) भोजन के लिए बिठाया जाता है। उसे भी तेहरवीं के ब्राह्मणों के साथ खिलाया जाता है, परंतु उसे 13 ब्राह्मणों में ना गिन कर अलग से बिठाया जाता है। उसे पद भी नहीं दिया जाता है। उसकी विदा उठनी के दिन होती है।
12. मृतक के सिरहाने मिट्टी का दिया जलाया जाता है जलाने के लिए सिर्फ तेल का उपयोग किया जाता है मृतक के उठने के साथ ही उसे हटा दिया जाता है। घी का दिया खुशी का प्रतीक होता है।इसलिए घी का दिया नही जलाते।
13. ब्राह्मणों के रूप में घर की बेटी भांजी भांजे को खिलाना में प्राथमिकता दी जाती है। सामान्यता सुहागिन महिला में सुहागिन महिला ही ब्राह्मण के रूप में खिलाई जाती हैं। पुरुषों और विधवा स्त्रियों के ब्राह्मण के रूप में घर के मान्य व पुरुष ब्राह्मण खिलाए जाते हैं। बाकी जिसकी जैसी मान्यता हो।
14. यदि दाग देने वाला नाबालिक हुआ। उसका जनेऊ ना हुआ हो तो उसी समय उसे परिवार जन द्वारा जनेऊ पहना दिया जाता है।
15. तीसरे दिन से शाम पीपल के पेड़ के नीचे दिया जलाया जाता है व एक पानी से भरा मटका भी लटकाया जाता है। जिसे शुद्धि के दिन हटा दिया जाता है।
16. तेहरवीं के दिन घर में हवन पूजन के उपरांत लगाए गए तिलक को पूजन के उपरांत मिटा दिया जाता है। वह पंडित जी द्वारा बांधे गए कलावे को तोड़कर हटा दिया जाता है।
17. पंचक नक्षत्र में मृत्यु शुभ नही मानी जाती। पंचक में मृत्यु में ये माना जाता है कि परिवार के अन्य लोगों पर भी संकट आ सकता है। इसलिए पंचक में मृत्यु होने पर मृतक के साथ तिल, जौ को आटे में मिलाकर 5 पुतले बनाकर चिता पर रख दिये जाते है।

दान - ज़रूरत भी ज़रूरी भी

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

'दान', शब्द जिसे सुनते ही हमारे अंदर पवित्र भावना का संचार होता है और दान से जुड़ा एक शब्द पुण्य साथ में आ जाता है यानी "दान-पुण्य"। हम सदैव अपने बड़ों से सुनते आए हैं दान करने से कष्ट और मुसीबतें कम होती हैं। हमारे समाज में दान भी विभिन्न प्रकार के दिनों, पर्व और त्यौहार के अनुरूप बंटे हुए हैं। सुना तो यहां तक है के प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामर्थ्य अनुसार दान करना चाहिए। भले ही 1 हो या एक मुट्ठी चावल या कुछ अन्य वस्तु हो। इस प्रकार के व्यक्ति मानवता के सच्चे पुजारी होते हैं।

इस लेख को लिखते समय मुझे एक कहानी याद आती है, जो महाभारत काल से जुड़ी हुई है। एक समय था, पांडव युद्ध जीत चुके थे इस खुशी में यज्ञ पूजन करने के बाद उन्होंने अपार धन गरीबों में बांटा, हर गरीब की झोली हीरे मोती और शक्तियों से भरी गई। उसी समय वहां एक नेवले का आगमन हुआ, जिसका आधा शरीर सुनहरा और आधा शरीर सामान्य था। पांडवों ने उससे आग्रह किया कि वह भी दान ले ले, 'आज तो हम लोग झोलियां भर के दान दे रहे हैं'। नेवले ने कहा,'नहीं मैं आपकी कोई भी वस्तु नहीं लूंगा क्योंकि आप जो बांट रहे हैं यह आडंबर और दिखावा है। इस दान में श्रद्धा तो दिख नहीं रही, प्रदर्शन और अहंकार बहुत ज्यादा है। बात को जारी रखते हुए नेवले ने बताया वह एक गरीब ब्राह्मण के घर से आ रहा है, उस घर में 4 सदस्य थे। उन्हें उतना ही आटा भिक्षा में मिला था जिसमें चार रोटी बन पाई थी। चारों सदस्य रोटी खाने को उठाए ही थे कि एक भूखा भिखारी आकर भोजन मांगने लगा। ब्राह्मण परिवार ने श्रद्धा भक्ति एवं प्रसन्न चित्त होकर अपनी-अपनी रोटी भिखारी खिलाकर उसे तृप्त किया और विदा कर खुद पानी पीकर सो गए। नेवला, ब्राह्मण की कुटिया में छिपकर बैठा था।तभी उसे एक स्थान रोटी के कण दिखे। भूखा होने के कारण वो रोटी के कण खाने को दौड़ा। पर यह क्या ? रोटी के कण छूते ही उसका आधा शरीर सोने का हो गया और आधा सामान्य ही रहा। यदि पांडवों के दान पुण्य में श्रद्धा भावना अधिक होती तो, यहां उसका बचा हुआ आधा शरीर भी सोने का हो गया होता।पर, ऐसा नहीं हुआ क्योंकि आप लोगों के आज के इस कार्यक्रम में अभिमान ,अहंकार और दंभ का दिखावा है। श्रद्धा भावना तो दिख ही नहीं रही है।

इस छोटी सी कहानी से हमें सीख मिलती है कि दान देने

में श्रद्धा भावना का होना बहुत आवश्यक है, वरना दान व्यर्थ चला जाता है। दान देने वालों की सभी प्रशंसा करते हैं। राजा शिवि, मुनि, दधीचि, करण आज भी दान के कारण ही अमर है। हमारे पास जो भी है, यथा धन, वस्तु, अन्न,बल,विद्या बुद्धि उसे किसी अन्य जीव को उसकी आवश्यकता अनुसार देना परम धर्म मानवता या कर्तव्य है। प्रकृति भी हम सब जीवों को बिना मांगे सब कुछ दे रही है। ईश्वर भी हमें बिन मांगे हमारी आवश्यकता अनुसार सब कुछ दे रहा है। वह भी हमेशा चाहता है कि हम अपनी वस्तुओं को देखकर जरूरतमंदों की मदद करें। 'दान' का शाब्दिक अर्थ है, देने की प्रक्रिया। सभी धर्मों में सुपात्र को दान देना परम कर्तव्य माना गया है। हिंदू धर्म में दान की बहुत महिमा बताई गई है।

आधुनिक संदर्भ में दान का अर्थ है किसी जरूरतमंद को सहायता के रूप में कुछ देना। दान की पूर्ति तभी मानी जाती है जब दान पाने वाले का अधिकार उस वस्तु या चीज पर स्थापित हो जाए और देने वाले का अधिकार उस वस्तु पर से समाप्त हो जाए। दान एक ऐसा पुण्य कार्य है, जिससे हम अपने धर्म का ठीक से पालन कर पाते हैं और अपने जीवन की समस्याओं से काफी कुछ निजात पा सकते हैं।

दान करने से ग्रहों की पीड़ा से भी मुक्ति पाना आसान हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नौ ग्रहों का प्रभाव सभी प्राणियों पर पड़ता है। यहां तक कि पेड़ पौधों पर भी पड़ता है। इन ग्रहों के दुष्प्रभाव को हटाने के लिए ज्योतिष में कई उपाय बताए गए हैं, जिन का विधि विधान से पालन करने पर अवश्य ही लाभ मिलता है। जैसे-

1) सूर्य गृह के लिए तांबे का बर्तन और गेहूं का दान करना उत्तम है। लाल चंदन लाल वस्त्र गुण स्वर्ण आदि देना भी ठीक है।

2) चंद्र ग्रह के लिए किसी मंदिर में कुछ दिन कच्चा दूध और चावल रखें। चांदी एवं अन्य सफेद वस्तुएं दान करना भी उत्तम है।
3) मंगलवार को बंदरों को भुने चने और गुड़ खिलाएं। इस ग्रह के लिए साबुत मसूर या मसूर दाल दान करने का महत्व है। मूंगा, केसर कस्तूरी ,का दान उत्तम है।
4) बुध ग्रह के लिए साबुत मूंग का दान उत्तम बताया गया है।तांबे के सिक्के में छेद करके नदी में बहाना भी अच्छा मानते हैं।
5) बृहस्पति ग्रह का दान चना दाल और पीली वस्तुएं मानी गई है। धार्मिक पुस्तकें, पीले फल भी दान कर सकते हैं।
6) शुक्र ग्रह में दही भी कपूर का दान करें। गाय को हरा चारा हिलाना भी अच्छा मानते हैं।
7) शनिवार को पीपल पेड़ के नीचे तेल के जलते दिए का दीप दान करें। तेल एक बर्तन में भरकर उसमें अपनी छाया देखें और उसे दान कर दें। काले साबुत उड़द और लोहे की वस्तुएं दान करना अति शुभ फलदाई माना गया है। नीलम दान करना भी उत्तम है।
8) राहु के दान के लिए दान में जो मूली और काली सरसों का महत्व कोयला तांबा आदि का दान भी अच्छा माना गया है।
9) केतु लाल चीटियों को आटा खिलाएं काला सफेद कंबल को ही हो को दान करें। स्वर्ण लोहा तिल लोहे का चाकू शीशा चलने डालकर लावे उत्तम माना गया है।

पुराणों में वर्णित है और हमारे बुजुर्ग भी कहते थे, कि अपनी नियमित आय का 10% व धार्मिक कार्यों एवं दान पुणे के निमित्त होना चाहिए। इससे मन में संतोष रहता है कि हमने पुनीत कार्य भी किए। हमारे यहां साल भर धार्मिक आयोजन के साथ ही दान पुण्य का कार्यक्रम चलता रहता है। जैसे, गर्मियों में लोग प्याऊ लगवा कर ठंडा जल, चना-गुड़ थके राहगीरों को बांटते हैं। कुछ लोग तो गर्मी की प्रचंड धूप में अपने घर के बाहर छायादार स्थान बना कर बैठ जाते हैं और रास्ता चलते लोगों को ठंडा ठंडा शरबत , पना और छाछ आदि से पदार्थ बांटते रहते हैं और अपने सुखद भविष्य का आशीर्वाद पाते हैं। इस प्रकार का आयोजन हम निस्वार्थ दान में मानते हैं। निस्वार्थ भाव से किया गया दान अति उत्तम माना गया है। वैशाख को सबसे गर्म महीना माना जाता है। इन गर्मी के दिनों में हमारे यहां जल भरे मटका सुराही, हाथ से चलने वाले पंखे, छाता चप्पल ऋतु फल जैसे खरबूज तरबूज आम दान करने का रिवाज है। सत्तू भी ठंडे माने जाते हैं। अतः इसका दान भी किया जाता है। बदलते समय के साथ लोक कूलकेज में भरकर ठंडा जल दान करते हैं।

भारतवर्ष त्योहारों का देश है। वर्ष भर, त्योहारों और पूजन की धूम मची रहती है। सावन- भादो, हरियाली पर्व और हरितालिका कन्याओं और सुहागिनों का त्यौहार मानते हैं। यह त्योहार भी पूजापाठ के साथ मिठाईयां वस्त्र और सुहाग सामान दान करने का मानते हैं। सावन मास में भोलेनाथ का पूजन अर्चन के साथ रुद्राभिषेक का बहुत महत्व है। यह पूजन भी पंडित जी को वहां की भांति के दान दक्षिणा देने पर ही पूर्ण होता है। क्वांर मास में श्राद्ध पक्ष और नवरात्रि की धूम मची रहती है। श्राद्ध पक्ष में हम अपने पूर्वजों को तर्पण भोजन और दान दक्षिणा देकर तृप्त करते हैं तो नवरात्रि में देवी मां की पूजा जागरण कन्या भोज सुहागिन पूजन आदि भी दान दक्षिणा देकर ही पूरा होता है। कार्तिक मास तो दीपदान के लिए प्रसिद्ध है। लोग विभिन्न प्रकार से दीपदान करते हैं, जैसे गली दिया, आकाश दिया, जल में दिए प्रवाहित करना तुलसी मां को दीप दान करना मंदिरों में दिए रखना आदि दीपावली का पांच दिवसीय त्योहार और डाला छठ का महापर्व इसी मास में पूजन अर्चन यमदीप दान और नई सब्जियों और गर्म चीजों के दाम से पूर्ण होता है। अगहन और माघ मास की एकादशी का अपना महत्व है। अगहन के प्रत्येक बृहस्पतिवार को लक्ष्मी चरण बनाकर लक्ष्मी नारायण की पूजा की जाती है। इस पूजन का समापन भी अन्नदान ,वस्त्रदान ,मिष्ठान दान आदि के द्वारा होता है। पूस और माघ मास में भी कन्हैया ,विष्णु-लक्ष्मी पूजन का महत्व है। माघ मास तो कल्पवास और गंगा स्नान के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ भी समापन दान-दक्षिणा से ही होता है।

फाल्गुन और चैत्र मॉस बहुत ही महत्वपूर्ण मास है।फाल्गुन मास होली गायन और होली की तैयारियों में बीत जाता है। फाल्गुन पूर्णिमा की रात होलिका दहन के साथ ही भोग , अछूता, मिष्ठान, पकवान का वितरण और ब्राह्मणों को सामर्थ्यानुसार दान देने लगते हैं। चैत्र मास प्रतिपदा की शुरुआत रंग खेलने से होती है फाल्गुन मास होली गायन और होली की तैयारियों में बीत जाता है। फाल्गुन पूर्णिमा की रात होलिका दहन के साथ ही भोग , अछूता ,मिष्ठान ,पकवान का वितरण और ब्राह्मणों को सामर्थ्यानुसार दान देने लगते हैं। गुजिया, पपड़ी और पकवानों का दान तो हमारे यहां प्रसिद्ध है। इसी मास में नवरात्रि और पूर्णिमा को हनुमान जयंती के साथ यह पूर्ण होता है। इस मास में अधिकाँश दिन हमें जगह जगह भंडारा और भोग प्रसाद आयोजन देखने को मिलता है। कहने का तात्पर्य हमारे यहां अन्नदान को सर्वोपरि माना गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कोई भी धार्मिक आयोजन दान-दक्षिणा के बिना पूर्ण नहीं होता है। इसी प्रकार 14 जनवरी यानी मकर संक्रांति सूर्य पर्व को हम भुला नहीं सकते हैं। इस दिन से सूर्य उत्तरायण में प्रवेश करते हैं। और इस पूरे दिन देश में पवित्र

नदियों में इस दिन से पूरे देश में पवित्र नदियों में स्नान ,धर्म कर्म आरम्भ हो जाते हैं। संक्रांति की समाप्ति भी तिल की मिठाइयां, खिचड़ी ,रजाई ,कम्बल,स्वेटर दान के द्वारा पूर्ण होती है। घरों में महिलाएं भी 14 वस्तुएं सुहागिनों को दान करती हैं और सबको मुंगौड़े और टिल की मिठाइयां खिलाती हैं। इस दिन तिल दान, नहान और खान का महत्त्व होता है।

दान करने का महत्व तभी होता है जब वह अपनी सामर्थ्य अनुसार दिखावा रहित और श्रद्धा से भरपूर हो। दान सदैव योग्य पात्र को ही देना चाहिए ,अन्यथा व्यर्थ हो जाता है। कई बार हम कुछ विषम परिस्थितियों में फंसे होने के कारण और सुयोग्य पात्र सामने ना होने के कारण दान नहीं दे पाते हैं और मन में मलाल रह जाता है। ऐसे समय में चिंता या मलाल करने की आवश्यकता नहीं है। आप मन ही मन अपने इष्ट देव को याद करें और उक्त वस्तु या वस्तुओं के दान का संकल्प बोल दे और उचित समय आने पर अपना दान सुयोग्य पात्र को दे दे। ऐसा माना गया है कि यह विधि भी शुभ फलदाई है। अन्न दान, वस्त्र दान, विद्या और अभय दान यह सभी दान इंसान को पुण्य का भागी बनाते हैं। किसी भी वस्तु का दान करने से मन को सांसारिक आ सकती यानी मुंह से छुटकारा मिलता है।

श्री रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि परहित के समान कोई धर्म नहीं है और पर पीड़ा या दूसरों को पीड़ा देने के समान कोई पाप नहीं है। प्रकट रूप से दान करने से ज्यादा 10 गुना ज्यादा पुण्य गुप्त दान करने से होता है। ऐसे में दानी व्यक्ति का नाम पता सब गुप्त रहता है। आपदा परिस्थिति जन्य स्थान पर दान करना भी महान दान मानते हैं। गरीबों को दान देना भी उत्तम दान है। ऐसे दान को बेनी माधव का दान मानते हैं। इस दान के साक्षी सिर्फ बेनी माधव ही होते हैं। शास्त्रों के अनुसार दान करने वाले व्यक्ति सदैव अपने जीवन में सभी सुख प्राप्त करते हैं। दानी व्यक्ति से भगवान भी बहुत प्रसन्न होते हैं। वराह पुराण के अनुसार अन्न जल का दान सर्वोत्तम है।

हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में दान करता है। लेकिन ज्योतिष- शास्त्र में राशि अनुसार दान करने का ज्यादा महत्व बताया गया है।

01) मेष राशि के जातकों के लिए काले चने, काली उड़द, तेल और फूलों का दान करते रहना उत्तम बताया गया है।

02) वृषभ राशि के व्यक्तियों के लिए आभूषण, काले वस्त्र, गुड़ ,चने की दाल, हल्दी, लोहा और सोने का दान करना उत्तम बताया गया है।

03) मिथुन राशि के जातकों के लिए पीली दाल, बर्तन, कपड़े ,फल और कांसा से संबंधित वस्तुएं दान करना उत्तम बताया है। सोमवार के दिन सफेद चीजों का दान करना शुभ फलदाई माना जाता है।

04) कर्क राशि के जातकों के लिए सफेद ,लाल वस्त्र ,चांदी , फल का दान करना चाहिए इन चीजों के दान करने से जीवन के दुख दर्द समाप्त होते हैं।

05) सिंह राशि के जातकों को भवन, दूध देने वाली गाय, सोना, तांबा, केसर, शंख, मोती आदि का दान करना पुण्य दायी मानते हैं।

06) कन्या राशि के जातकों को कांसा, हरे वस्त्र, पैसा, पन्ना, सोना, शंख, फलों का दान करना उत्तम रहता है।

07) तुला राशि के जातकों को सफेद वस्त्र, मोती ,तेल, पीली वस्तुओं का दान करना बाधा एवं पीड़ा नाशक मानते हैं।

08) वृश्चिक राशि के जातकों को गुलाबी कपड़ा, मिश्री, फल, चावल की मिठाइयां दान करना उत्तम है।

09) धनु राशि वालों के लिए पीली वस्तुएं दान करना उत्तम माना गया है। जैसे, पीली दालें पीले फल ,पीली मिठाईयां , पीले वस्त्र, बेसन बूंदी के लड्डू, धार्मिक पुस्तकें दान करना शुभ है। किसी भी मंदिर या धार्मिक संस्था में आर्थिक मदद देना और इन धार्मिक संस्थाओं में श्रमदान करना भी शुभ फलदाई होता है।

10) मकर राशि वाले जातकों को चावल खिचड़ी, कंबल, चादर, गुड़, मूंगफली और हरे कपड़ों का दान करना उत्तम मानते हैं।

11) कुंभ राशि के जातकों के लिए ऊनी कपड़े सूती कपड़ों का दान तेल , जूते चप्पल का दान करना सर्वोत्तम माना गया है।मंदिरों ,वृद्ध आश्रम अनाथालय मैं मदद करना भी इस राशि के जातकों के लिए शुभ फलदाई माना जाता है।

12) मीन राशि के जातकों को पीला रेशमी कपड़ा, चने की दाल, मिठाइयां खिचड़ी भांति भांति के अनाज और वस्त्रादि दान करना अच्छा बताया गया है। किसी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च में जाकर सेवा करना श्रमदान देना भी अति शुभ फलदाई मानते हैं।

हर मास की एकादशी अमावस्या और पूर्णिमा को भी लोग यथासंभव दान करते हैं। एकादशी के दिन चावल का दान नहीं करना चाहिए ऐसा मानते हैं। अमावस्या का दान हमारे पूर्वजों के निमित्त होता है। और इस और इस दान से वो तृप्त होते हैं। पूर्णमासी को सफ़ेद वस्तुओं का दान करने से चन्द्रमा शीतल होता है। यह तो हुआ धार्मिक रूप में दान का महत्व। पर, कहते हैं असली दान तो वो है कि जब एक हाथ दान करे तो दुसरे को पता भी न चले। विगत 1 वर्ष में, मैंने देखा यदि किसी व्यक्ति ने चार पूड़ी और सब्जी का पैकेट भी बांटा है तो उसने अपनी फोटो खींचा कर उसका प्रचार प्रसार भी बहुत किया है। इस दान में ,श्रद्धा भावना न होकर दंभ और दिखावा बहुत है। यह दान फलित नहीं होता। दान अवश्य करें, परंतु श्रद्धा भाव और आदर से हो तभी ये सब के लिए शुभ फलदाई होगा।

शाखा समाचार

लखनऊ

दिनाँक 14 जुलाई 2021को लखनऊ मंडल की वर्तमान कार्यकारिणी की अंतिम बैठक अध्यक्ष श्री लेखेंद्र पुत्तन जी की अध्यक्षता में आयोजित हुई। मीटिंग की शुरुआत अजय जी के मंगलाचरण से हुई। फिर कोषाध्यक्ष पूनम जी ने वर्ष 20-21 की बैलेंस शीट प्रस्तुत की। जिस पर अच्छी चर्चा हुई। बहस में सर्व श्री रमेश जी, आनंद जी, राजीव जी (सभी उपाध्यक्ष) निखिल जी(सहमंत्री), यदुवेश जी द्वय, प्रफूल्ल जी, गुल्लन जी, अशोक जी, प्रदीप जी, दिलीप सिकंदरपुरिया जी, हर्ष जी, अनुज जी,अरुण जी, नीलम जी, राखी जी ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। पिंटू जी के कुछ सुझाव के साथ सदन ने बैलेंस शीट पास कर दी। सदन ने आडिटर गौरव जी एवं कोषाध्यक्ष पूनम जी को बैलेंस शीट उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद दिया। इसके बाद अध्यक्ष पुत्तन जी ने सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को उनके सहयोग एवं समर्थन के लिए धन्यवाद देते हुए उनके कार्यकाल में लखनऊ समाज के सहयोग के लिए भी आभार जताया। सदन ने वर्तमान कार्यकारिणी को कोरोना के बाबजूद दोनो वर्षों में सामाजिक गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए बधाई भी दी। मंत्री ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मंडल की पारिवारिक डायरेक्टरी संभवतः 25 जुलाई को छपकर उपलब्ध होगी। सदन में आगामी 25 जुलाई 21 को लखनऊ मंडल के द्विवार्षिक चुनाव कार्यक्रम पर भी चर्चा हुई। सभी ने विश्वास जताया कि मंडल की परम्परा के अनुसार पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से ही चयन होगा। अंत में सदन ने स्वर्णेश जी एवं राखी जी को मीटिंग की व्यवस्था करने एवं सुमधुर जलपान के लिए धन्यवाद दिया।

– **शिशिर चतुर्वेदी,** मंत्री

आगरा

श्री ललित जी की अध्यक्षता में श्री माथुर चतुर्वेदी सभा,आगरा की बैठक आयोजित की गई। अध्यक्ष निर्वाचित होने के तुरंत बाद श्री ललित जी ने आगरा सभा की अपनी कार्य समिति का गठन किया।

दुर्भाग्यवश इस कोरोना महामारी में कई परिवारों के प्रियजन दिव्यधाम को प्रस्थान कर गये। श्री माथुर चतुर्वेदी सभा द्वारा 30 मई, 2021 को बैठक का आयोजन कर शोकसभा में शोक संतप्त परिवारो के कोरोना काल में असमय गोलोकवासी हुए बांधवो के प्रति श्रद्धांजलि तथ शोकाकुल परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। युवा चतुर्वेदी मंच, आगरा के संस्थापक सदस्य और वर्तमान में महासभा के महामंत्री मुनीन्द्र नाथ जी, नोएडा ने संवेदना प्रकट करते हुए यह भी बताया कि सम्पूर्ण समाज ने इस करोना महामारी काल की दूसरी लहर में लगभग 170 बांधवों को खोया है। महासभा के कोषाध्यक्ष महेश चंद्र जी, दिल्ली और अभयराज जी ने गुरुग्राम, उपमा जी लखनऊ ने अपनी शोक संवेदना व्यक्त की।

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, आगरा के अध्यक्ष श्री ललित जी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि जब हम जीवन में अपने सबसे प्यारे व्यक्ति को खो देते हैं तो समय थमा हुआ सा प्रतीत होता है, लेकिन यह जरूरी है, कि आप खुद को एवं परिवार को संभालें और बाकी का कार्य हौसलों के साथ शुरू करें, ताकि उनकी आत्मा को सुकून मिले और वह स्वर्ग में शांति से बिराजें।

माथुर चतुर्वेदी सभा, आगरा की ऑनलाइन बैठक दिनाँक 6 जून, 2021, रविवार को अध्यक्ष ललित जी की अनुपस्थिति में वरिष्ठ उपाध्यक्ष रमाकांत जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक के प्रारंभ में स्वर्गीय डॉ मनोज जी, स्व. भूपेन्द्र जी और स्व. राजीव जी को श्रद्धांजलि दी गई। सभा के महामंत्री पुनीत जी ने आगरा समाज के चतुर्वेदी परिवारों की विस्तृत विवरणिका, खेलकूद संबंधित कार्यक्रमों की जो रूपरेखा को प्रस्तुत किया। इसी क्रम में रमाकांत जी, अनुराग जी (पार्षद), रोहित जी, सौरभ जी अपने स्वविवेक से समाज के बांधवों की पीड़ा को समझते हुए आगे आए और समाज के बांधवों को पूरी मदद करने का आश्वासन देते हुए सभी को व्हाट्सएप्प के माध्यम से अपने फोन नंबर उपलब्ध करवाए। हर्ष मोहन जी की अध्यक्षता में उनकी सहमति से एक समिति गठित की जाएगी, जो आगरा समाज के उन परिवारों को चिन्हित करेगी जिन्हें कोरोना महामारी की वजह से अत्यंत दुश्वारियों का सामना करना पड़ा है तथा जिन परिवारों को सहायता की जरूरत है। उन्हें यथासंभव सहायता से लाभान्वित करवाने की कोशिश की जा सके। बैठक में प्रदीप जी (लालन), अरुण जी, राकेश पाठक जी, अनुराग जी (पार्षद), रोहित जी, सौरभ जी, पदम जी, कपिल जी, ज्ञानीश जी, आशुतोष पाठक जी, हेमेंद्र जी, विशाल जी आदि ने अपने-अपने विचार रखे।2021 में आगरा और आस-पास के गांवों में निवासरत चतुर्वेदी समाज के बांधवों की विस्तृत विवरणिका के लिए विवरणिका समिति, सभा के महामंत्री पुनीत जी (9412591029) एवं मंत्री आशीष जी (9410406214) के संयोजन में बनाकर युवा मंच के सहयोग से लगभग सभी परिवारों का विवरण प्राप्त कर लिया गया है। समिति समाज के सहयोग से यथाशीघ्र विवरणिका के प्रकाशन के लिए प्रयासरत है। इस संदर्भ में सभा के मंत्री

आशीष जी ने अब तक हुई समिति की बैठकों एवं प्रगति से सदस्यों को अवगत करवाया, जिसकी समस्त सदस्यों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और अपने विचार व्यक्त किए।चतुर्वेदी चंद्रिका के माध्यम से उपरोक्त सभी बांधवों से निवेदन है कि यदि हमारा आपसे संपर्क नहीं हो पाया है तो आप अपने परिवार का विवरण कृपया सभा के महामंत्री एवं मंत्री को उपरोक्त नंबरों पर देने का कष्ट अवश्य करें। आगरा चतुर्वेदी समाज की मातृशक्ति को सक्रिय करने हेतु श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, आगरा की महिला प्रकोष्ठ की एक बैठक दिनाँक 27 जून, 2021 को ललित जी के आवास पर आयोजित की गई। जिसमें सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि यदि सब कुछ सामान्य परिस्थितियों में दिनांक 15 अगस्त,2021 को महिला प्रकोष्ठ के सहयोग से समाज हेतु खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा। जिसमें बच्चों के कार्यक्रम विशेषकर रहेंगे। साथ ही समाज के अन्य वर्गों की भी प्रतियोगिताएं करवाई जाएंगी।उक्त बैठक में सभा के महिला प्रकोष्ठ से संगीता जी, क्षमा जी, सुधा जी, अरुणा जी, अनुपम जी (बसई), अलका जी, अनुराधा जी, क्षमा जी (लाजपतकुंज), अनुपमा जी एवं हर्षमोहन जी, श्री पुनीत जी, रोहित जी, सौरभ जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। बैठक का संचालन सभा के मंत्री और कार्यक्रम के समन्वयक अनुराग जी (सिकंदरा) द्वारा किया गया। बैठक की अध्यक्षता कर रहे सभा के अध्यक्ष श्री ललित जी द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ बैठक का समापन किया गया। – **पुनीत चतुर्वेदी** (महामंत्री)

समाज समाचार

* श्री असीम चतुर्वेदी सुपुत्र श्री अपूर्व एवम श्रीमती छमा चतुर्वेदी (पुरा/फिरोजाबाद/अलीगढ़) द्वारा अपने बाबा एवम् दादी श्रद्धेय स्वर्गीय श्री अरूण प्रकाश एवम् स्वर्गीय श्रीमती श्यामा चतुर्वेदी की स्मृति स्वरूप अन्नपूर्णा योजना में 12000/– की राशि का सहयोग दिया। र.क्र.552

* स्व. श्रीमती उषा चतुर्वेदी पत्नी श्री ऋषिकेश चतुर्वेदी (भरतपुर/कोटा) की चौबरसी पर उनकी पुत्रियों रुची चतुर्वेदी, रितु चतुर्वेदी एवं तृप्ति चतुर्वेदी द्वारा 12000/– बारह हजार रुपये अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत महासभा सहायतार्थ प्रदान किये। र.क्र.498

* लेफ्टिनेंट विपुल चतुर्वेदी सुपुत्र हरेश चतुर्वेदी श्रीमती अनुराधा चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. उमाशंकर जी चतुर्वेदी एवं स्व. डॉ. कुसुम चतुर्वेदी (पिनाहट/आगरा) ने कंप्यूटर साइंस में

बी.टेक करने के उपरांत सी.डी.एस. के द्वारा रक्षा सेवाओं में उपलब्धि हासिल की। 29 मई 2021 को चेन्नई में ऑफीसर्स ट्रेंनिंग अकेडमी में पासिंग आउट परेड के बाद लेफ्टिनेंट विपुल चतुर्वेदी भारतीय सेना के अभिन्न अंग बन गए। विपुल चतुर्वेदी देश के प्रख्यात हास्य व्यंग कवि श्री हरेश चतुर्वेदी एवं (पिनाहट/आगरा) के पुत्र हैं। इस अवसर पर आपने महासभा सहायतार्थ 1001/– रुपए व पत्रिका सहायतार्थ 501/– रुपये प्रदान किए। र.क्र.575

* स्वर्गीय राकेश चंद्र चतुर्वेदी (भरतपुर/अजमेर) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी (अजमेर) में महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 50,000/– प्रदान किए। –र.क्र.594

* चि. विभोर कुमार चतुर्वेदी पुत्र श्री दिलीप कुमार चतुर्वेदी (पिनाहट/हरिद्वार) का विवाह 23 अप्रैल 2021 को सौ. सुनिधि चतुर्वेदी पुत्री श्री संतोष कुमार चतुर्वेदी (पुरा कन्हैरा/कानपुर) के साथ भोपाल में संपन्न हुआ एवं 27 जून 2021 को आशिमा रॉयल सिटी में गृह प्रवेश की पूजा संपन्न हुई। इस अवसर पर आपने महाविद्या देवी मंदिर सहायतार्थ 2001/– रुपये महासभा को प्रदान किए।

* चि. प्रियंक सुपौत्र स्व. श्री अम्बा प्रसाद जी एवं स्व. श्रीमती कांति चतुर्वेदी सुपुत्र श्री गिरीश चंद जी एवं श्रीमती

कविता चतुर्वेदी (जयपुर/भोपाल) का शुभ विवाह सौ. अनुष्का सुपौत्री स्व. श्री विनय कुमार जी एवं श्रीमती शकुंतला चतुर्वेदी सुपुत्री श्री राजीव एवं श्रीमती शेफाली चतुर्वेदी के साथ दिनांक 15 जुलाई 2021 को सानंद वृंदावन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री गिरीश जी ने महासभा को पत्रिका सहायतार्थ 5100/– प्रदान किये। (र.क्र. 616)

* मेरे पिता स्व. सतीश चंद्र और माता स्व. चमेली देवी के आशीर्वाद और ईश्वर की असीम अनुकम्पा से हमारे पुत्र चि. शशांक तथा सौ. तृप्ति की पुत्रियां छवि और भुवि ने 12वी और 10वी की परीक्षा उत्तीर्ण की है। छवि का एडमिशन 12वी के बाद Narsee Monjee, Mumbai में MBA Tech (MBA + Enginnering) Computer Enginnering में हो गया है। भुवि ने 10वी में 93 प्रतिशत प्राप्त करके वाणिज्य संकाय में एडमिशन लिया है। पुत्री रुचि और दामाद प्रणय ने नए प्लांट का थाइलैंड में भूमि पूजन किया है । इस अवसर पर रमेश जी (मैनपुरी/सिलवासा) अन्नपूर्णा सहायतार्थ 24000/– रुपये प्रदान किये। – र.क्र –540

* श्री हरीश एवं श्रीमती वंदना (मैनपुरी/लखनऊ) ने अपनी सुपुत्री सौ. रितिका एवं चि अनुज(फरौली/लखनऊ) के 18 जुलाई 2021 को लखनऊ में सम्पन्न शुभ विवाह के अवसर पर 501रु. महासभा तथा 501रु. चंद्रिका सहायतार्थ प्रदान किये। – र.क्र.608

* स्व. श्रीमती उषा चतुर्वेदी पत्नी श्री ऋषिकेश चतुर्वेदी (भरतपुर/कोटा) की चौबरसी पर उनकी पुत्रियों रुची चतुर्वेदी, रितु चतुर्वेदी एवं तृप्ति चतुर्वेदी द्वारा 12000/– बारह हजार रुपये अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत महासभा सहायतार्थ प्रदान किये। – र.क्र.498

शोक समाचार

* श्री शिव प्रसाद जी चतुर्वेदी, पुत्र स्व. श्री मिश्री लाल जी चतुर्वेदी (जयपुर) का स्वर्गवास दिनांक 22.06.2021 को जयपुर में 90 वर्ष की आयु में जयपुर में हो गया।
* श्रीमती देवी सोती पत्नी स्व. श्री अरूण सोती (मैनपुरी/ फिरोजाबाद) का स्वर्गवास दिनांक 28 जून 2021 को फिरोजाबाद में हो गया।
* श्री विजय कुमार मिश्र (खजांची परिवार,मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 29 जून 2011 को लखनऊ में हो गया।
* श्री मणिकांत,बॉबी पुत्र स्व. मुरारी लाल जी (मैनपुरी / देहरादून) का स्वर्गवास दिनांक 30 जून 2021 को जयपुर में हो गया।
* श्रीमती उमा चतुर्वेदी पत्नी डा. उमेश चतुर्वेदी (मैनपुरी/ लखनऊ) का स्वर्गवास दिनांक 2 जुलाई 2021को गया है।
* श्री अवध कुमार चतुर्वेदी पुत्र श्री अमरनाथ चतुर्वेदी (फिरोजाबाद/ऋषिकेश) का स्वर्गवास दिनांक 03 जुलाई 2021 को जयपुर में हो गया।
* श्री त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी पुत्र स्व. छक्कन लाल जी (फरौली/पटना) का स्वर्गवास लगभग 78 वर्ष की आयु में दिनांक 05 जुलाई 2021 को पटना में हो गया।
* श्रीमती अपर्णा पत्नी हरीश चतुर्वेदी, रि. गार्ड (तरसोखर/झांसी) का स्वर्गवास दिनांक 6 जुलाई 2021 को सड़क दुर्घटना में हो गया।
* श्रीमती कमोदिनी चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री ओम प्रकाश चतुर्वेदी (पिनाहट/भोपाल) का स्वर्गवास दिनांक 7 जुलाई 2021 को भोपाल में हो गया।
* श्रीमती सुधा चतुर्वेदी पत्नी श्री लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (सुबोध) (फरौली /इलाहाबाद) का स्वर्गवास 80 वर्ष की आयु में दिनांक 09 जुलाई 2021 को इलाहाबाद में हो गया।
* श्री शेवेन्द्र चतुर्वेदी (होलीपुरा/ सिरपुर कागजनगर) का स्वर्गवास दिनांक 09 जुलाई 2021 को हैदराबाद में हो गया।
* श्री जितेंद्र चतुर्वेदी सुपुत्र विष्णुदत्त चतुर्वेदीका स्वर्गवास दिनांक 12/ 07/ 2021 को छोटी सादड़ी में हो गया।
* संजय चतुर्वेदी पुत्र स्व. रमेश चतुर्वेदी (मैनपुरी) का स्वर्गवास लगभग 60 वर्ष की आयु में दिनाँक 10 जुलाई 2021 को हो गया।
* श्रीमती देवी चतुर्वेदी पत्नी स्व0 श्री उमेश चंद्र चतुर्वेदी (फिरोजाबाद/ लखनऊ) का स्वर्गवास 11 मई 2021 को 88 वर्ष की आयु में लखनऊ में हो गया।
* श्री राजीव चतुर्वेदी पुत्र स्व. रमेश चतुर्वेदी (कमतरी/आगरा) का स्वर्गवास 4 मई 2021 को आगरा में हो गया।
* श्रीमती पुष्पा मिश्रा पत्नी स्व. प्रमोद चंद्र मिश्रा का स्वर्गवास दिनांक 8 मई 2021 को 102 वर्ष की आयु में गुड़गांव में हो गया।
* श्रीमती शारदा चतुर्वेदी पत्नी स्व. चित्र नाथ चतुर्वेदी (डोरी वाले मथुरा) का स्वर्गवास दिनाँक 13 जुलाई 2021 को मथुरा में हो गया।
* श्री अर्पित पुत्र श्री ज्ञान प्रकाश चतुर्वेदी (चन्द्रपुर/कानपुर) का असामायिक स्वर्गवास 32 वर्ष की अल्प आयु में दिनाँक 13 जुलाई 2021 की रात को फतेहपुर के पास सड़क दुर्घटना में हो गया।
* श्री प्रकाश चंद चतुर्वेदी (फरौली/जबलपुर/दिल्ली) का स्वर्गवास दिनाक 23.04.2021 को उनके पुत्र गौरव के पास दिल्ली में हो गया। आप प्रदीप जी (संजू) गाजियाबाद के ससुर थे।
* श्री कौशल किशोर चतुर्वेदी (मैनपुरी/हरदोई) का स्वर्गवास दिनाँक 16/07/21 को लखनऊ में हो गया।
* श्री सुधीर चतुर्वेदी पुत्र स्व. निरंजन लाल जी (तरसोखर/कोलकाता) का स्वर्गवास दिनाँक 19/07/21 को कोलकाता में हो गया।
* श्री मुरलीधर चतुर्वेदी निवासी (उचाड़/ ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 21 जुलाई 2021 को ग्वालियर में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।